सिसृक्षा

express your talent

स्मारिका

ओपन बुक्स ऑनलाइन-लखनऊ चैप्टर

तृतीय जयन्ती वर्ष 2015

शब्द व्यायाम से गीत बनते नहीं , वेदना के बिना व्यर्थ अनुराग है।
गीत तो आंसुओं में ढले हैं सदा यदि हृदय में प्रबल आग ही आग है॥

सिसृक्षा

वर्ष1, अंक1, मई 2015

संरक्षक - डॉ. शरदिंदु मुकर्जी
सम्पादक - डॉ. गोपाल नारायन श्रीवास्तव
विशेष सहयोग - केवल प्रसाद 'सत्यम'
सलाहकार समिति
संध्या सिंह
कुंती मुकर्जी
आलोक रावत 'आहत लखनवी'
नवीन मणि त्रिपाठी

संपर्क-सूत्र
37, रोहतास एन्क्लेव
फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016
मो. नं. 9935394949, 9795518586

प्रकाशक
अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद

स्मारिका में प्रकाशित सामग्री कवि अथवा लेखक के निजी भाव एवं विचार हैं, इसके लिए संपादन उत्तरदायी नहीं होगा।

-संरक्षक

ओबीओ-लखनऊ चैप्टर अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद के प्रति आभारी है जिसके सौजन्य से इस स्मारिका का प्रकाशन संभव हुआ।

- संरक्षक

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय
2 / कुछ भाव मेरे भी

शुभकामना / आलेख
3 / ऐसे हुआ ओपन बुक्स ऑनलाईन का आगाज़
3 / ओबीओ : सशक्त अंतरजाल साहित्य मंच
4 / ओ बी ओ साहित्य साधना का महायज्ञ
5 / ओपन बुक्स ऑनलाइन : एक अविराम यात्रा
6 / ओ बी ओ टीम का संक्षिप्त परिचय
9 / ओपन बुक्स ऑनलाइन लखनऊ चैप्टर का इतिवृत्त
10 / ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर के युयुत्सु

अतुकांत कविता
12 / गिरिराज भंडारी
13 / विजय निकोर

ग़ज़ल
14 / मिथिलेश वामनकर
14 / शिज्जु शकूर
15 / आलोक रावत
15 / राणा प्रताप सिंह

छंद
16 / अरुण कुमार निगम
16 / राज बुन्देली
16 / मनोज कुमार शुक्ल 'मनुज'
16 / डॉ. गोपाल नारायन श्रीवास्तव

नवगीत/नवकविता/गीत
17 / सौरभ पाण्डेय
18 / संध्या सिंह
18 / डॉ. प्राची सिंह
19 / धीरज मिश्र

बाल गीत/लोरी
19 / केवल प्रसाद 'सत्यम'

लघु कथायें
12 / हरि प्रकाश दुबे
14 / पवन कुमार
20 / विनय कुमार सिंह
20 / मीना पाठक
20 / सौरभ पाण्डेय
22 / जितेन्द्र पस्तारिया

यात्रा वृत्तांत
21 / कुंती मुकर्जी

कुछ भाव मेरे भी

गोपाल नारायण श्रीवास्तव

वीणापाणि वराननना वरे विदुष विद्वान।
वाणी-वाणी वत्सला वर्ण-वर्ण वरदान।।

सुखदा सदा सरस्वती माँ का स्मरण कर अंतरजाल की सुप्रसिद्ध हिन्दी वेब-साईट ओपन बुक्स ऑनलाइन (ओ बी ओ) के लखनऊ चैप्टर की स्मारिका 'सिसृक्षा' का यह पहला अंक सभी साहित्य अनुरागियों के हाथों में सौंपते हुए इस बात का परम हर्ष है कि इसी वर्ष 1 अप्रैल 2015 को संस्था ने पांच वर्ष की गौरवमयी यात्रा पूर्ण की और छठे सोपान की ओर अग्रसर हुआ। संयोग से इस वर्ष ओ बी ओ का लखनऊ चैप्टर भी गौरवमय अतीत की याद संजोये अपनी यात्रा के दो वर्ष मई 2015 में पूर्ण कर रहा है। प्रस्तुत स्मारिका ओ बी ओ, लखनऊ चैप्टर की इसी उपलब्धि का परिचायक है।

सिसृक्षा का अर्थ है – सृजन की इच्छा। जब परात्पर परब्रह्म ने सिसृक्षा की होगी तभी इस सृष्टि की रचना हुयी होगी। स्पष्ट है कि सृजन के लिए सिसृक्षा का होना अनिवार्य है। आदरणीय गणेश जी 'बागी' के ह्रदय में भी कभी इसी सिसृक्षा ने हाहाकार किया होगा जिसके फलस्वरूप आज से पांच वर्ष पूर्व ओ बी ओ की नींव पड़ी जिसने आज विकसित होकर एक विशाल और भव्य प्रासाद का आकार ले लिया है।

ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर का सारा सार-संभार मुख्य रूप से कुछ प्रतिबद्ध साहित्य अनुरागियों के सुदृढ़ स्कंध रूपी अधिकरण पर टिका हुआ है। ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर प्रति माह एक कार्यक्रम करता है। इस प्रकार के कार्यक्रम सामूहिक सहयोग से निष्पन्न होते हैं और चिरकाल तक किसी भी छोटी या बड़ी संस्था को अस्तित्व में बनाये रखते हैं। पहले यह मात्र काव्य-पाठ तक ही सीमित था परन्तु शरद सत्र से कुछ उत्साही और प्रतिबद्ध साहित्यप्रेमियों की कर्मठता से इसका स्वरुप काफी-कुछ बदला है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो इसमें हुआ वह कानपुर जनपद के साहित्यकारों से समन्वय स्थापित करना था, चाहे वे ओ बी ओ के सदस्य थे अथवा नहीं थे। इस प्रकार लखनऊ चैप्टर ने गैर सदस्य साहित्यकारों को भी ओ बी ओ के बैनर तले लाने का स्तुत्य कार्य किया। इतना ही नहीं गोरखपुर तक से श्री पवन कुमार सदृश युवा कवि लखनऊ चैप्टर के कार्यक्रमों में कई बार आये जो ओ बी ओ के सक्रिय सदस्य भी हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य यह हुआ कि मासिक कार्यक्रम को काव्य-गोष्ठी की संकुचित रूढ़ि से स्वतंत्र किया गया और उसमें परिचर्चा, व्याख्यान तथा साहित्यिक विमर्श को भी स्थान दिया गया। पिछले छह माहों की बात करें तो इस अवधि में काव्य-पाठ के समानांतर 'हिन्दी भाषा का वैश्विक परिदृश्य'', 'राम की शक्ति-पूजा (महाकाव्य) का वस्तु विन्यास एवं 'शोक का अप्रतिम काव्य –सरोज स्मृति' आदि विषयों पर गंभीर परिचर्चा हुयी। प्रख्यात भू-वैज्ञानिक एवं पत्रकार विजय जोशी ने 'गुजरे दिनों की चंद बातें' शीर्षक के अंतर्गत लखनऊ एवं अवध के इतिहास पर अपना विशद व्याख्यान दिया। डॉ. शरदिन्दु ने 'अंटार्कटिका और भारत – कुछ जानी, कुछ अनजानी बातें' विषय पर न केवल अपना व्याख्यान दिया अपितु प्रोजेक्टर के माध्यम से वहां के अद्भुत दृश्यों का साक्षात भी कराया। ये सब शरद सत्र की नवीन उपलब्धियाँ हैं। इससे स्पष्ट है कि ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर का मार्ग धीरे-धीरे प्रशस्त होता जा रहा है।

सिसृक्षा के इस पहले अंक के लिए विशेष रूप से कुछ रचनाएँ प्राप्त हुई हैं और कुछ ओ.बी.ओ. की वेब-साईट से चुनकर पुनः प्रकाशित की गयी हैं. इन सभी रचनाओं के स्रष्टा रचनाकारों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

ईश्वर साहित्य अनुरागियों की सिसृक्षा को अक्षुण्ण और जीवंत बनाये।

शुभकामना

ऐसे हुआ ओपन बुक्स ऑनलाईन का आगाज़

ई. गणेश जी 'बागी'
संस्थापक/मुख्य प्रबंधक (ओपनबुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम)
संपर्क सूत्र : +91 9431288405

साथियों, ओपन बुक्स ऑनलाइन परिवार के पाँच वर्ष पूर्ण होने तथा ओपन बुक्स ऑनलाइन लखनऊ चैप्टर के तृतीय स्थापना दिवस पर मैं आप सभी को हृदय से बधाई देता हूँ। आप सभी के अथाह प्रेम, सहयोग एवं समर्पण ने ओ बी ओ परिवार को साहित्य के आकाश में चमकते चाँद की तरह सुशोभित कर दिया है। दोस्तों, कहते हैं न कि नाम नहीं काम बोलता है तो इन पाँच वर्षों में इस परिवार ने अपने साहित्य कर्म के कारण ही साहित्य की दुनिया में अपना एक अलग मुकाम हासिल किया है.

साथियों, सवाल यह उठता है कि आखिर ओ बी ओ अस्तित्व में आया ही क्यों या ओ बी ओ स्थापित करने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी? मैं बताना चाहूँगा कि पाँच वर्ष पहले अर्थात वर्ष 2010 में मैंने महसूस किया कि अंतर्जाल पर साहित्य में काम तो हो रहा है किन्तु यह सभी कार्य एकतरफा (वन-वे) हो रहे हैं। ब्लॉगस्पॉट के रूप में छोटी छोटी इकाइयों में लिखने वाले लेखकों की पहुँच एक सीमित पाठकवर्ग तक ही है और वह एक दूसरे से अपनी रचनाओं को पढ़ने की चिरौरी करते हुए दिखते हैं। कई लेखक साथियों के ब्लॉग पर आते हैं और 'वाह वाह', 'क्या बात है', 'बहुत खूब' लिखने के बाद अपने ब्लॉग का पता देते हुए यह कह ज़ाते हैं कि कृपया यहाँ भी पधारें। यानी परोक्ष रूप से कहते हैं कि 'मैंने तेरी पीठ खुजा दी, अब तू मेरी खुजा'। साथ ही सीखने सिखाने की परम्परा कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी।

फिर मैंने सोचा कि क्यों न एक ऐसी वेबसाईट तैयार की जाए जहाँ सभी लेखक एक छत के नीचे हों, एक दूसरे के गुरु भी बने और शिष्य भी। इंटरएक्टिव कार्यक्रम हो, एक परिवार की भाँति सीखने सिखाने का कार्य हो, लेखकों को प्रोत्साहित किया जाए। इसका परिणाम हुआ कि 1 अप्रैल 2010 को ओपन बुक्स ऑनलाइन परिवार विधिवत अस्तित्व में आ गया। वो कहते हैं ना .... 'मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर, लोग आते गए कारवां बनता गया।'

मेरे साथ भी कुछ यही हुआ मैंने अकेले ही इस परिवार की नींव रखी थी और आज प्रबंधन और कार्यकारिणी सहित कुल ग्यारह लोगों की टीम करीब तीन हजार सदस्यों के इस परिवार के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु दिन रात एक किये हुए है। इस सफ़र में कंधा से कंधा मिलाकर चलने वाले प्रधान सम्पादक श्री योगराज प्रभाकर, प्रबंधन सदस्य श्री सौरभ पाण्डेय, श्री राणा प्रताप सिंह, डॉ प्राची सिंह, पूर्व प्रबंधन सदस्य श्री नवीन चतुर्वेदी, श्री अम्बरीश श्रीवास्तव साथ ही अन्य सहयोगी सदस्य श्रीमती आशा पाण्डेय, श्रीमती राजेश कुमारी, श्री संजीव सलिल, श्री तिलक राज कपूर, श्री वीनस केसरी, श्री अभिनव अरुण, श्री अरुण निगम सहित सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ, आप सभी ने मिलकर इस ओ बी ओ परिवार को एक नई ऊंचाई प्रदान की है। इन पाँच वर्षों में कई सारे खट्टे-मीठे अनुभव भी हुए जिनका जिक्र यहाँ आवश्यक नहीं है। किन्तु यह जरुर कहूँगा कि नकारात्मक शक्तियाँ पूरी ताकत से हमारे पैर खींचने में लगी थीं और लगी हैं। किन्तु मैंने भी सुन रखा था कि यदि आप पवित्रता के साथ एक कदम बढ़ाते हैं, तो पूरी कायनात मदद के लिए दस कदम आगे आ जाती है और परिणाम आपके सामने है। आज हम सभी ओ बी ओ मंच पर ब्लॉग, फोरम, टाइम बेस्ड लाइव कार्यक्रमों के माध्यम से गद्य एवं पद्य की अनेक विधाओं पर अपनी कलम आजमाईश कर रहे हैं और एक दूसरे से सीखते और सिखाते हैं।

ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर ने ओ बी ओ के कंसेप्ट को और आगे बढ़ाने का कार्य किया है तथा आभासी दुनिया से जुड़ने के साथ-साथ सदस्यों को मासिक काव्य गोष्ठियों के माध्यम से भौतिक मंच प्रदान किया है। मैं ओबीओ लखनऊ चैप्टर को सफलता पूर्वक संचालित करने हेतु इस चैप्टर से जुड़े सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूँ साथ ही विशेष रूप से श्री प्रदीप सिंह कुशवाहा, श्री शरदिंदु मुखर्जी, श्रीमती कुंती मुखर्जी, डॉ. गोपाल नारायन श्रीवास्तव, श्री बृजेश नीरज और श्री केवल प्रसाद जी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ. आप सभी के बगैर अब तक का सफ़र आसान न होता।

एक बार पुनः आप सभी को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनायें।

शुभकामना

ओबीओ : सशक्त अंतरजाल साहित्य मंच

पंकज त्रिवेदी
संपादक - विश्वगाथा (हिन्दी साहित्य की त्रैमासिक प्रिंट पत्रिका)
vishwagatha@gmail.com

ओबीओ के प्रधान संपादक श्री योगराज प्रभाकर जी मेरे लिए कई सालों से बड़े भाई और करीबी मित्र रहे हैं। अंतरजाल की दुनिया में कदम रखते ही मुझे श्री योगराज जी से स्नेह मिला और दोस्ती की गहराई और आपसी समझदारी ने हमें उस मुकाम तक पंहुचा दिया जहाँ से हम मौन की भाषा में भी संवाद करने को सक्षम हो गए। हम दोनों के साथ कनाडा से एक तीसरा मित्र भी था, शमशाद इलाही। उसे याद करना अनिवार्य इसलिए भी है कि हम तीनों के बीच साहित्यिक विधाओं और रचनाओं पर जमकर चर्चाएँ होती थीं। योगराज जी हमेशा विचारों के बारे में स्वस्थ और शांत मन से चर्चा कर लेते मगर शमशाद कई बार

अपनी आक्रमकता के साथ दलील करता। मगर कभी किसी विषय में गलत नहीं होता था। उनकी सच्चाई हमेशा हमारा दिल जीत लेती थी।

ओबीओ की स्थापना होने से पहले से संस्थापक सह मुख्य प्रबंधक श्री गणेश बागी मेरे अनुज थे और आज भी हैं। ओबीओ की स्थापना करने के बाद श्री गणेश बागी ने बड़े भाई योगराज जी के साथ पूरी टीम तैयार की। हिन्दी भाषा-साहित्य के साथ उन्होंने उर्दू को भी महत्त्व दिया। खासकर ग़ज़ल, नवगीत, तरही मुशायरा, विविध विधाओं पर चर्चा सभाएं आयोजित की। अपनी प्रवृत्तियों में पाठकों-रचनाकारों को जोड़ने के लिए प्रतिस्पर्धा एवं ओबीओ पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले रचनाकारों को समय समय पर पुरस्कृत भी किया। ओबीओ आज साहित्य के क्षेत्र में आनलाईन (अंतरजाल) माध्यम में सशक्त मंच के रूप में प्रस्थापित हो चुका है। फिर उनके साथ जुड़े श्री सौरभ पाण्डेय, जो मेरे परम मित्र तो हैं ही, साथ ही नवगीत में प्रयोगशीलता के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत के बाद खुद को एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में साबित किया। साथ ही श्री वीनस केसरी ने ओबीओ मंच से जुड़ने के बाद जब 'अंजुमन प्रकाशन' शुरू किया तब प्रकाशन की पहली सोच से मैं साक्षी रहा हूँ। वीनस के प्रति मेरा अपार प्रेम वात्सल्य प्रेरित है।

मैंने ओबीओ की प्रारंभिक टीम के सदस्यों में न केवल साहित्यकारों को पाया है बल्कि बहुत ही अच्छे इंसानों को भी प्राप्त किया है। सभी की क्षमताओं के अनुसार हम लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में कार्य शुरू किया मगर कहीं भी कोई वैचारिक टकराव या ईर्ष्या का भाव पैदा नहीं हुआ। हम सभी के लिए यह सबसे बड़ी उपलब्धि है।

मैंने अहिन्दी क्षेत्र गुजरात से पहले 'नव्या' और दूसरे वर्ष से 'विश्वगाथा' के रूप में हिन्दी साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका शुरू की। मेरे लिए यह चुनौती होने के बावजूद आज भी निरंतर प्रकाशन जारी है।

ओबीओ लखनऊ चैप्टर की शुरुआत मेरे स्मरण के अनुसार दो वर्ष पूर्व हुई। लखनऊ के साहित्यकारों ने अपने आप में ओबीओ की प्रेरणा से अनेकविध कार्यक्रमों का लगातार आयोजन किया। मैं अपनी कुछ मर्यादाओं और गुजरात का निवासी होने के कारण उन कार्यशिविरों में नहीं जा पाता हूँ मगर सभी कार्यक्रमों की बारीकी से जानकारी प्राप्त करता रहता हूँ। अप्रत्यक्ष रूप में भी मेरे लिए ओबीओ संजीवनी साबित हुआ है। 17 मई 2015 को होने वाले 'ज्ञानपर्व' और स्मरणिका के लिए अंतःकरण से मेरी शुभकामनाएं देता हूँ।

शुभकामना

ओ बी ओ साहित्य साधना का महायज्ञ

योगराज प्रभाकर
प्रधान संपादक (ओपनबुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम)
संपर्क : 98725 68228

आदरणीय साथियों,

ओबीओ की पाँचवीं वर्षगाँठ के साथ ही ओबीओ लखनऊ चैप्टर की तीसरी जयंती का मनाया जाना एक बेहद सुखद संयोग है जिसने परिवार की खुशियों को दोबाला कर दिया है। ओबीओ लखनऊ चैप्टर वास्तव में ओपनबुक्स ऑनलाइन परिवार के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। संभवतः ओबीओ द्वारा प्रारम्भ साहित्य साधना का महायज्ञ ओबीओ लखनऊ चैप्टर की पूर्णाहुति के बगैर अधूरा रहता।

ओबीओ के प्रचार-प्रसार में हमारे लखनऊ चैप्टर का बहुत बड़ा योगदान है। पूर्व में लखनऊ के इलावा कुछेक और जगहों पर ही ओबीओ चैप्टर प्रारम्भ हुए थे किन्तु कतिपय कारणों से वे रास्ते ही में दम तोड़ गए। ऐसे में लखनऊ चैप्टर की दो वर्ष की लम्बी यात्रा और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। गत दो वर्षों में लखनऊ चैप्टर द्वारा ओबीओ के उद्देश्यों को पूर्ण करने में जो श्रम साध्य कार्य किया गया है, वह वंदनीय है। हर माह साहित्य गोष्ठी का आयोजन कर लखनऊ चैप्टर बेहद सराहनीय काम कर रहा है, जिसकी पूरे ओबीओ परिवार में भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि अंतर्जाल के आभासी पटल के अतिरिक्त हमारा परिवार ज़मीनी स्तर पर भी साहित्य साधना में व्यस्त है, और इस गर्व का सारा श्रेय हमारे लखनऊ चैप्टर एवं उससे जुड़े हुए कर्मठ योद्धाओं को ही जाता है।

मैं इस शुभ अवसर पर समस्त ओबीओ लखनऊ चैप्टर परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही बहुत आदर से धन्यवाद देना चाहूँगा श्री डॉ शरदिंदु मुकर्जी जी, श्री प्रदीप सिंह कुशवाहा जी, श्रीमती कुंती मुकर्जी जी, डॉ गोपाल नारायन श्रीवास्तव जी, भाई बृजेश नीरज जी, और भाई श्री केवल प्रसाद जी को, जिनके अथक प्रयास से ओबीओ लखनऊ चैप्टर आज अपने तीसरे वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। जय ओबीओ ! जय भारती !

सादर व सप्रेम

ओपन बुक्स ऑनलाइन - एक अविराम यात्रा

डॉ. गोपाल नारायन श्रीवास्तव

ओपन बुक्स ऑनलाईन (ओ बी ओ) ने 1 अप्रैल 2015 को अपनी यात्रा के पांच सुखद और उपलब्धि भरे वर्ष पूरे किये। इस अवसर पर ओ बी ओ के प्रधान सम्पादक योगराज प्रभाकर जी ने ओ बी ओ फोरम में अपना एक महत्वपूर्ण आलेख पोस्ट किया – 'ओ बी ओ की पांचवी वर्षगाँठ पर -दो शब्द'। इसमें उन्होंने इस संस्था के पांच वर्ष की यात्रा को बड़े मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है। वे कहते हैं –

'किसी ने सच ही कहा है कि समय के पंख होते हैं। अब देखिये न देखते ही देखते पाँच साल गुज़र गए और हमारा प्रिय ओपनबुक्स ऑनलाइन छठे वर्ष में भी प्रवेश कर गया। सफर बेहद खुशनुमा रहा, रास्ते आसान नहीं थे। मगर हमसफ़र हमेशा ही दिलदार थे, समय समय पर रास्ता दिखाने वालों का साथ मिलता रहा - अब भी मिल रहा है। एक इकहरी शाख़ को एक छतनार शजर बनते हुए देखने का अनुभव कितना सुखद कितना जादुई होता है। उस समय भले ही जोश का बोलबाला था किन्तु एक जज़्बा था, एक आग थी सभी के अंदर कुछ कर गुजरने की। समय गुजरने के साथ ही जोश और होश का सुमेल होना प्रारम्भ हुआ और उस आग को एक मशाल का रूप मिला। उस मशाल को लेकर रौशनी बांटने का जो सिलसिला शुरू हुआ वह निर्बाध जारी है। '

स्पष्ट है कि अंतरजाल की वेब –साईट पर इस संस्था का प्रादुर्भाव अब से पांच वर्ष पूर्व हुआ था। गत पांच वर्षो में ओ बी ओ परिवार ने अपने को अधिकाधिक सुदृढ़ किया है। आज इसकी सदस्य संख्या लगभग 3000 है जो किसी भी साहित्यिक चैनल के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इसके मुख्य ब्लॉग में अब तक लगभग 10,000 रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें कविता, गीत, नवगीत, अकविता, अतुकांत कविता, ग़ज़ल, हिन्दी की विविध छंद रचना के साथ ही लघु-कथा एवं हिन्दी कहानी का भी उचित समाहार हुआ है। ओ बी ओ प्रति माह अपने दो रचनाकारों को क्रमशः 'सर्व श्रेष्ठ लेखन' एवं 'सक्रिय सदस्य' का सम्मान प्रदान करता है। इसके मुख-पृष्ठ पर विनय कुल द्वारा रचे बड़े ही चुटीले कार्टून देखने और पढ़ने को मिलते हैं।

ओ बी ओ ने अपनी अविराम विकास यात्रा में कुछ मासिक कार्यक्रम भी तय किये जो क्रमशः 'ओबीओ लाईव तरही मुशायरा', 'ओबीओ लाईव महोत्सव' और 'चित्र से काव्य तक छन्दोत्सव' के अभिधान में हैं। 'ओबीओ लाईव तरही मुशायरा' में सदस्यों को किसी प्रसिद्ध शायर के किसी शेर का एक मिसरा दिया जाता है और उसी आलंबन पर मतला ग़ज़ल की रचना इस प्रतिबन्ध के साथ अपेक्षित होती है कि दिया गया मिसरा ग़ज़ल में कहीं न कहीं समाहित अवश्य हो। माह अप्रैल 2015 तक इसके 58 सफल आयोजन हो चुके हैं और इसकी अविराम यात्रा लगभग पांच वर्षो से अनवरत चल रही है।

'ओ बी ओ लाईव महोत्सव' हिन्दी के छंदों पर आधारित है। इसमें सदस्यों को प्रदत्त छंदों में से किसी एक छंद को अपनी मर्जी से चुनकर निर्दिष्ट विषय पर छंद रचने का अवसर दिया जाता है। जिन छंदों में रचना अपेक्षित होती है उनका शिल्प विधान ओ बी ओ के 'समूह' डिस्कशंस में आयोजन के पूर्व समझा दिया जाता है ताकि नवीन रचनाकारों को शिल्प के लिए भटकना न पड़े। यह आयोजन लगभग साढ़े चार वर्ष पहले प्रारंभ किया गया था जो अव्याहत गति से प्रवाहमान है। इन दोनों ही आयोजनो की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई जा चुकी है।

'चित्र से काव्य तक छन्दोत्सव' कार्यक्रम में सामान्यतः अंतर्जाल से प्राप्त किसी चित्र की भाव-भूमि को हिन्दी के किसी छंद विशेष पर रूपायित करने हेतु सदस्यों को निर्दिष्ट किया जाता है। यह महोत्सव भी अपनी अविराम यात्रा के क्रम में चार वर्ष पूर्ण कर चुका है। माह जून 2015 में ओ बी ओ इस कार्यक्रम की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक मना सकेगा, यह अविराम यात्रा के नजरिये से एक अवश्यम्भावी सत्य है। इन महोत्सवों की विशेषता यह है कि इनमें एडमिन के पदाधिकारी भी उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करते हैं और समस्त रचनाओं पर आपस में स्वस्थ राय का आदान –प्रदान होता है। इन कार्यक्रमों को आयोजित करने का एक निहित उद्देश्य यह भी है कि नए हस्ताक्षर इनमें प्रतिभाग कर अपने से वरिष्ठ रचनाकारों से कुछ सीख सकें और वरिष्ठ रचनाकार भी तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अपना मूल्यांकन करें। मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि ऐसी सुष्ठु परंपरा अंतरजाल में हिन्दी की अन्य साईट्स पर अद्यतन उपलब्ध नहीं है।

ओ बी ओ के 'फोरम' और 'समूह' परिचर्चा में कुल 36 विभाग हैं। इन सभी विभागों में खुली चर्चा के साझा अवसर उपलब्ध हैं, जिन्हें विद्वान सदस्यों ने अपने विचारों से अधिकाधिक समृद्ध किया है। इसके अनेक लेख अंतरजाल की विभिन्न साईट्स पर अपनी धूम मचाये हुए हैं। हिन्दी की छंद विधा पर तो यहाँ व्यापक अनुसन्धान तक हुए हैं। इसकी 55 चर्चाओं में 35 चर्चायें सौरभ पाण्डेय जी की हैं। ग़ज़ल की जैसी कक्षा ओ बी ओ ने लगाई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। आचार्य 'सलिल' और विशेषकर वीनस केसरी ने उर्दू का पूरा छंद-शिल्प ही साकार कर दिया है, जिसे पढ़कर ग़ज़ल से डरकर भागने वाला यह लेखक स्वयं ग़ज़ल लिखने की ओर प्रवृत्त हुआ। अप्रैल 2015 से ओ बी ओ प्रबंधन ने चित्राधारित लघु-कथा-संगठन का खुले मंच पर आयोजन भी प्रारम्भ कर दिया है। इस प्रकार के नवोन्मेष ही किसी संस्था की जान होते हैं और ऐसे उन्मेषों को मूर्त्त रूप देना ही उस संस्था में प्राण-वायु संचार करना है।

संस्थाएँ बनती हैं, बिगड़ती हैं, कदाचित लोप भी हो जाती हैं, पर जिनकी जिजीविषा प्रबल होती है, वे दीर्घजीवी अवश्य होती हैं। ओ बी ओ को जहाँ तक मैंने जाना है इसकी कुछ ऐसी विशेषतायें हैं जो इसे कालजयी बनाती हैं। पहला उत्कृष्ट प्रबंधन, टीम में अनुशासन और सह-बंधुत्व, टीम का प्रति छमाही नवीकरण, सदस्यों को अनुशासित रखने की अद्भुत क्षमता, कुशल संपादन, अच्छे रचनाकारों को प्रोत्साहन, नयी संभावनाओं की खोज, प्रयोगधर्मिता, पारदर्शिता, निःशुल्क सेवा, अपनी त्रुटियों, कमियों को पहचानने, परखने और परिहार करने का कौशल और सबसे अहम बात नए और पुराने यहाँ तक कि अनुभवी रचनाकारों तक में सृजनेच्छा को जागृत करना। ओ बी ओ की यह भी खासियत है कि रचनाओं की शत-प्रतिशत शुद्धता की ओर इसका आग्रह सदैव अप्रतिहत रहता है। यहाँ अनुभवी रचनाकार भी बख्शे नहीं जाते। उनकी त्रुटियां भी सामने आती हैं और सप्रमाण आती हैं। उन्हें झुठलाया नहीं जा सकता। यहाँ छोटे –बड़े, नए-पुराने, नव-प्रशिक्षु और अनुभवी सभी परस्पर सीखते - सिखाते हैं। यही ओ बी ओ की अविराम यात्रा का मूल मन्त्र है।

ओ बी ओ टीम का संक्षिप्त परिचय

पाँच सदस्यीय प्रबंधन समिति

गणेश जी 'बागी'
मुख्य प्रबंधक

गणेश जी 'बागी' का जन्म उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक जिला बलिया में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा श्री जटहा बाबा आदर्श माध्यमिक विद्यालय में हुयी और पूर्व माध्यमिक शिक्षा इन्होंने बलिया के प्रतिष्ठित राजकीय इंटरमीडिएट कालेज से प्राप्त की। कालांतर में टाउन पॉलीटेकनिक बलिया से सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा 1996 में ग्रहण करने के उपरांत इनका चयन बिहार लोक सेवा आयोग, पटना से अवर अभियंता (Junior Engineer) पद हेतु हुआ। सन् 1999 में इनकी नियुक्ति पथ निर्माण विभाग, बिहार, पटना में हुयी। सेवा में रहते हुए ही बागी जी ने सिविल इंजीनियरिंग में अभियांत्रिक स्नातक डिग्री (AMIE) प्रतिष्ठित The Institution of Engineers (India) से हासिल की। बिहार लोक सेवा आयोग पटना द्वारा इनका पुनः चयन सहायक अभियंता (Assistant Engineer) के पद हेतु हुआ और सन् 2014 से वे पथ निर्माण विभाग, बिहार, पटना में नियुक्त होकर बिहार राज्य पुल निर्माण निगम लिमिटेड, पटना में योजना अभियंता (Planning Engineer) के रूप में कार्यरत हैं।

साहित्य में बागी जी की रुचि बचपन से ही थी किन्तु माहौल की कमी, समयाभाव या जिम्मेदारियों के बोझ के कारण वे इस दिशा में कुछ खास नहीं कर सके। प्रथमतः इन्होंने भोजपुरी और फिर हिंदी में लेखन प्रारंभ किया। ग़ज़ल और लघु-कथा विधा में बागी जी को महारत हासिल है। इनके बागी उपनाम का भी एक रोचक किस्सा है। बागी जी सत्तावनी क्रांति के सूत्रधार मंगल पाण्डे की धरती से तो जुड़े हैं ही, इनके स्वभाव में भी वही क्रांतिकारी तेवर विद्यमान हैं। इसी के मद्देनजर मित्रों ने इन्हें 'बागी' कहना प्रारंभ कर दिया तभी से यह अलंकरण उनके व्यक्तित्व के साथ सायुज्य हो गया है।

सन् 2010 में वेब साईट पर अच्छे साहित्यिक मंच का अभाव देखकर आपने ओपन बुक्स ऑनलाइन की रूप-रेखा तैयार की और चंद मित्रों एवं सहयोगियों के साथ इसका शुभारम्भ किया। आज वे लगभग 3000 सदस्यों वाले परिवार के संरक्षक और संस्था के संस्थापक/ मुख्य प्रबंधक हैं।

योगराज प्रभाकर
प्रधान संपादक

योगराज प्रभाकर जिन्हें 'योगी' अभिधान से भी नवाजा जाता है, ओपन बुक्स ऑनलाइन वेब- साईट के प्रधान सम्पादक हैं। आप उच्च कोटि के विद्वान हैं और सभी विधाओं में रुचि रखने वाले हैं। बागी और प्रभाकर में साहित्य की दृष्टि से एक दिलचस्प साम्य यह है कि दोनों ही ग़ज़ल के पारखी और लघु कथा विधा के महारथी हैं। प्रभाकर अधिकांशत : रचनाओं के मूल रूप से छेड़-छाड़ नहीं करते पर अपनी टिप्पणियों से अवश्य खबर लेते हैं। यही कारण है कि नए रचनाकार यहाँ हतोत्साहित नहीं होते और पूरी आज़ादी से अपनी रचनायें प्रस्तुत करते हैं। योगराज प्रभाकर का संपादन कौशल इस दृष्टि से स्पृहणीय है कि वे अवांछनीय सामग्री दृढ़ता से अस्वीकार कर देते हैं। सदस्यों की संख्या बढ़ने से इनका दायित्व भी बढ़ा है पर वे मजबूती से अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहे हैं।

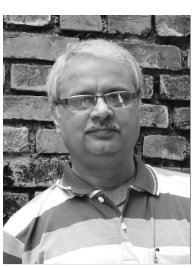

सौरभ पाण्डेय

नैनी, इलाहाबाद के निवासी सौरभ पाण्डेय हिन्दी और संस्कृत में गहरी पैठ रखने वाले समर्थ साहित्यकार हैं। हिन्दी के छंद हों या उर्दू-हिन्दी की ग़ज़ल, वे शिल्प के विश्वकर्मा हैं। इनके लिए साहित्य-कर्म मात्र संप्रेषण नहीं, बल्कि विचार-मंथन एवं सतत मनन का पर्याय है। साहित्य जगत में आपकी पहचान एक गंभीर साहित्यकार के रूप में होती है। आप पद्य-साहित्य की लगभग हर विधा में साधिकार रचनाकर्म करते हैं तथा विभिन्न शास्त्रीय छन्दों पर आपकी दखल

अनुकरणीय है। आप ओपन बुक्स ऑनलाइन के प्रबन्धन मण्डल के सदस्य तो हैं ही, त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' के परामर्शदात्री समूह के सदस्य के तौर पर भी सम्मानित हैं। आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्रिकाओं और ई-पत्रिकाओं में नियमित रूप से स्थान पाती हैं तथा आकाशवाणी से अधिकांशतः उनका पाठ होता रहता है। हिन्दी के साथ-साथ भोजपुरी साहित्य में भी आपकी गहरी रुचि है और आप इस भाषा में उन्नत रचनाकर्म करते हैं। लगभग बाइस वर्षों से आप राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न कॉर्पोरेट इकाइयों में कार्यरत हैं। सम्प्रति, सरकारी-ग़ैरसरकारी परियोजनाओं तथा प्रकल्पों को संचालित करने के क्रम में एक व्यावसायिक इकाई में 'नेशनल हेड' हैं। आप गणित से स्नातक होने के साथ सॉफ़्टवेयर तथा निर्यात-प्रबन्धन में भी डिप्लोमा प्राप्त हैं। आपने प्रबन्धन की डिग्री भी ली है। स्वामी विवेकानन्द के विचारों का आप पर बहुत अधिक प्रभाव है।

राणा प्रताप सिंह

मूल रूप से इलाहाबाद निवासी राणा प्रताप सिंह भारतीय वायु सेना के युवा अधिकारी हैं। ग़ज़ल विधा के ये विचक्षण विद्वान हैं और ओ बी ओ द्वारा प्रति माह जो तरही मुशायरा आयोजित होता है उसका संचालन राणा प्रताप बड़ी संलिप्तता से करते हैं। टीम प्रबंधन का सदस्य होने के कारण आपका दायित्व बड़ा है। आप ऐसे आइसबर्ग हैं जिसका तीन हिस्सा पानी में छिपा रहता है और केवल एक हिस्सा नजर आता है।

प्राची सिंह

डॉ. प्राची सिंह पर्यावरणविद होने के साथ ही हलद्वानी स्थित एक तकनीकी महाविद्यालय की डीन हैं। सही अर्थों में वे एक विदुषी महिला हैं जिनका हिन्दी भाषा पर अनन्य अधिकार है। आपकी हिन्दी कविताओं में जहाँ संस्कृतनिष्ठ पद संरचना देखने को मिलती है वहीं उनमें कुछ दार्शनिक तथा आध्यात्मिक आभास भी झलकता है। डॉ. प्राची ओ बी ओ प्रबंधन टीम का अपरिहार्य अंग हैं।

छः सदस्यीय कार्यकारिणी समिति

राजेश कुमारी
कार्यकारिणी प्रमुख

सुश्री राजेश कुमारी ओ बी ओ कार्यकारिणी की सदस्या होने के साथ ही साथ सह-संयोजक भी हैं। आप स्वभाव से धीर-गंभीर और शांत प्रकृति की हैं तथा आपकी सक्रियता स्पृहणीय है। हिन्दी-उर्दू की ग़ज़ल के साथ ही हिन्दी के छंदों पर भी आपकी अच्छी पकड़ है। ओ बी ओ के नए अथवा पुराने सभी प्रकार के रचनाकार आपके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा करते हैं और अनुमोदन पाकर आश्वस्त होते हैं। राजेश कुमारी की रचनाधर्मिता प्रबल है और वे प्रायशः लिखती ही रहती हैं। ओ बी ओ सदस्यों के बीच आपकी लोकप्रियता असंदिग्ध है।

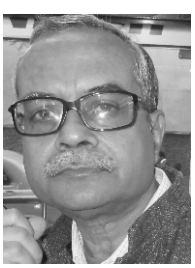

डॉ. शरदिंदु मुकर्जी

डॉ. शरदिंदु मुकर्जी एक भू-वैज्ञानिक हैं। साढ़े तीन वर्ष पूर्व उच्चस्तरीय सरकारी सेवा से निवृत हुए हैं। भारत सरकार की ओर से चार बार अंटार्कटिका मिशन हेतु चयनित होकर आपने अनेक महत्वपूर्ण अनुसंधान किये। वैज्ञानिकमना होने के साथ ही बांग्ला और हिन्दी साहित्य में आपकी गहरी रुचि है। ओ बी ओ कार्यकारिणी के सदस्य होने के अतिरिक्त आप ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर के मुख्य संयोजक भी हैं। अंटार्कटिका के अपने विशद अनुभव पर आप एक पुस्तक भी लिख रहे हैं। हिन्दी की अतुकांत शैली की मार्मिक कविता रचने में बेजोड़ हैं।

अरुण कुमार निगम

अरुण कुमार निगम एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीयकृत बैंक में उच्च अधिकारी होने के साथ ही ओ बी ओ कार्यकारिणी के महत्वपूर्ण सदस्य हैं। बैंक की व्यस्त सेवा से समय निकाल कर साहित्य की एकांत-साधना करते हैं। हिन्दी के छन्दों पर आपका जबरदस्त अधिकार है। आपकी रचनाएँ ओ बी ओ के छंद और चित्र महोत्सव में अपना विशिष्ट स्थान बनाती हैं। कविता का जैसा स्वाभाविक प्रवाह आपकी रचनाओं में होता है वह प्रायशः दुर्लभ है।

गिरिराज भंडारी

गिरिराज भंडारी के पूर्वज खैरागढ़ राज्य (छत्तीसगढ़) के राजाओं के समय में स्टोर कीपर (भंडारी) हुआ करते थे। इसलिए इनके बड़े नाना और हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार स्व. श्री पदुम लाल पुन्ना लाल बख्शी की हार्दिक इच्छा थी कि लोग आने वाले समय में इस पुरानी बात को न भूलें। अतः उनकी इच्छा का समादर करते हुए पिता की सहमति प्राप्त कर गिरिराज श्रीवास्तव ने स्वयं को गिरिराज भंडारी लिखना प्रारम्भ कर दिया। गिरिराज जी ग़ज़लों के उस्ताद हैं और ओ बी ओ कार्यकारिणी के प्रतिष्ठित सदस्य हैं। स्वभावतः सरल और निरभिमान हैं। ओ बी ओ के ब्लॉग पर आप सदैव सक्रिय रहते हैं और सभी सदस्यों को इनका प्यार और समुचित मार्गदर्शन मिलता रहता है.

शिज्जु शकूर

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी शिज्जू शकूर एल्डर फार्मास्यूटिकल्स में सेल्स प्रमोशन का कार्य करते हैं। स्वभाव से गंभीर और अंतर्मुखी हैं। इसीलिये एकांत में रहना इन्हें अधिक प्रिय है। उनके इस स्वभाव से मित्रगण भी प्रभावित होते रहते हैं। सम्प्रति आप ओ बी ओ कार्यकारिणी के एक सक्रिय सदस्य हैं। हिन्दी-उर्दू की ग़ज़लों की दुनिया में आपने खास जगह बनाई है। ग़ज़ल के साथ ही आप कभी कभी हिन्दी की अच्छी कवितायें भी लिखते हैं।

मिथिलेश वामनकर

मिथिलेश वामनकर वर्ष 2007 में पी.एस.सी परीक्षा पास कर मध्यप्रदेश वाणिज्यिक कर विभाग में वाणिज्यिक कर अधिकारी के रूप में भोपाल में पदस्थ हुये। इस दौरान विभागीय हेल्पलाइन की एक हिंदी में साइट 'हेल्पटैक्स' बनाई जो काफी चर्चित हुयी। सम्प्रति, जबलपुर में वाणिज्यिक कर विभाग में सहायक आयुक्त हैं। आप साहित्य की सभी विधाओं में लेखन करते हैं। अपनी प्रतिभा के बल पर ओ बी ओ में इन्होंने आते ही एडमिन का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। ओ बी ओ के 2015 के ग्रीष्म सत्र हेतु आप कार्यकारिणी के नवीनतम सदस्य चुने गए हैं। हिन्दी - उर्दू ग़ज़ल पर आपका समान अधिकार है। इसके साथ ही हिन्दी गीत, कविता, कहानी आदि लिखने में भी आपकी अभिरुचि है।

ओ.बी.ओ. लखनऊ चैप्टर स्थापना दिवस समारोह

तथा स्मारिका प्रकाशन हेतु

अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद

(प्रोपराइटर- वीनस केसरी)

की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ

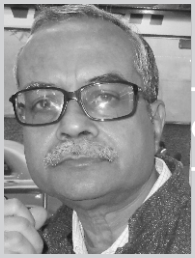

ओपन बुक्स ऑनलाईन, लखनऊ चैप्टर का इतिवृत्त

डॉ. शरदिंदु मुकर्जी
संयोजक, लखनऊ चैप्टर

साहित्य और ललित कला के प्रति अनुराग शायद लखनऊ वासियों के जीवन का ऐसा अभिन्न अंग है कि उसे विशेष रूप से उकेर कर चित्रित करना अनावश्यक एवं असहज आचरण होगा। इस ऐतिहासिक शहर के कोने-कोने में छोटी-बड़ी असंख्य संस्थाएँ हैं जो हर दिन अपने-अपने अंदाज़ में अपनी क्षमता व सामर्थ्य अनुसार शब्द-साधना व साहित्य सेवा में रत हैं। इसी क्रम में अभी से दो साल पहले लखनऊ के कतिपय उत्साही रचनाकर्मियों के सम्मिलित प्रयास से ओपन बुक्स ऑनलाईन – लखनऊ चैप्टर की स्थापना हुई। अंतरजाल की दुनिया में मुख्यतः हिंदी और हिंदुस्तानी साहित्य के माध्यम से अपना विशिष्ट स्थान बनाकर ओ.बी.ओ. आज एक परिचित नाम है। मई 2013 में इसके संस्थापक पटना निवासी श्री गणेश जी 'बागी' किसी कार्यवश लखनऊ आए हुए थे। उस समय तक लखनऊ के बहुत सारे लोग ओ.बी.ओ. से जुड़ चुके थे किन्तु अब तक उनका आपसी परिचय अंतर्जाल तक ही सीमित था। अतः 'बागी' जी के लखनऊ आगमन के अवसर पर प्रदीप कुमार सिंह कुशवाहा ने प्रस्ताव रखा कि उनसे मिला जाए और ओ.बी.ओ. के लखनऊ चैप्टर की स्थापना की जाए। उनके इस आह्वान पर केवल प्रसाद 'सत्यम' एवं बृजेश नीरज ने सोत्साह सहमति दी तथा वे पहली बार एक दूसरे से साक्षात मिले। इस प्रकार ओ.बी.ओ.-लखनऊ चैप्टर का जन्म हुआ।

'बागी' जी की अध्यक्षता, माननीय डंडा लखनवी के मुख्य आतिथ्य और श्री आदित्य चतुर्वेदी के संचालन में इस नयी संस्था का पहला आयोजन काव्य गोष्ठी के रूप में 18 मई 2013 को डिप्लोमा इंजीनियर संघ भवन में सम्पन्न हुआ। तब से लेकर अभी तक हर महीने ओ.बी.ओ. लखनऊ चैप्टर की मासिक गोष्ठी निर्बाध होती रही है। समय के साथ इन आयोजनों का कलेवर थोड़ा बदला है। कुछ पुराने साथी समयाभाव अथवा अन्य व्यक्तिगत कारणों से आयोजनों से दूर रहने में मजबूर हुए हैं तो दूसरी ओर नए लोगों का साथ मिलता चला है और नयी सम्भावनाओं को दिशा मिली है।

ओ.बी.ओ. लखनऊ चैप्टर के आयोजनों को विविधता और विस्तार देने के उद्देश्य से समय-समय पर साहित्यिक परिचर्चा तथा ऐसे गैर साहित्यिक विषयों को व्याख्यान के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया जो न केवल जिज्ञासा उद्रेककारी हैं अपितु हमारी ज़िंदगी के बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं. नियमित मासिक काव्य-गोष्ठी के साथ ऐसे ही कुछ आयोजनों की सूची इस प्रकार है -

1. 'साहित्य-धर्मिता' 03 अगस्त 2013 - परिचर्चा

2. 'सामाजिक दायित्व के निर्वहन में समकालीन कविता की भूमिका' 23 मार्च 2014 - परिचर्चा

3. 'गुजरे ज़माने की चंद बातें' 23 नवम्बर 2014 - अवध के इतिहास विषय पर व्याख्यान

4- 'अंटार्कटिका और भारत – कुछ जानी कुछ अनजानी बातें 21 दिसम्बर 2014 - अंटार्कटिका में भारत के वैज्ञानिक अभियान पर व्याख्यान

ओ.बी.ओ. लखनऊ चैप्टर के इस पहल को हर वय समूह के श्रोताओं द्वारा खूब सराहा गया है। हमारी कोशिश है कि आने वाले दिनों में रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जुड़े विविध विषयों को लेकर हर मासिक गोष्ठी में विशेषज्ञों द्वारा इस प्रकार के व्याख्यान/परिचर्चा का आयोजन किया जाए क्योंकि इस प्रकार अर्जित ज्ञान से साहित्य सृजन का आधार और पुष्ट व मजबूत होना अनिवार्य है।

यद्यपि अभी ओ.बी.ओ.-लखनऊ चैप्टर से जुड़े कुछ ही लोग अंतर्जाल की दुनिया में पाँव पसारे ओपन बुक्स ऑनलाईन की मुख्य धारा के औपचारिक सदस्य हैं, पर हमारी इच्छा और ध्येय यह है कि धीरे-धीरे सभी इस मुख्य धारा के सदस्य बनकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करें और सीखने-सिखाने वाले इस अद्भुत मंच पर गरिमामय साहित्य वाचन का आनंद एक दूसरे से साझा करें।

जनवरी 2014 में कानपुर के कुछ उत्साही साहित्य प्रेमियों के आग्रह पर पहली बार यह मासिक गोष्ठी लखनऊ से बाहर कानपुर में आयोजित की गयी थी। इसके बाद अप्रैल तथा जुलाई 2014 में भी कानपुर में ही ओ.बी.ओ.-लखनऊ चैप्टर की मासिक गोष्ठी आयोजित की गयी। इसके फलस्वरूप कानपुर और लखनऊ के साहित्य प्रेमियों में आपसी भाई-चारे और सहयोग की भावना बढ़ी तथा साहित्यिक विचारों का आदान-प्रदान हुआ। हम इसी भावना को जीवंत रखने का स्वप्न देखते हैं और गर्व के साथ कहना चाहते हैं कि क्षणिक प्रचार-प्रसार के प्रलोभन में न आकर ओ.बी.ओ. लखनऊ चैप्टर की मासिक गोष्ठियों में हमने साहित्यिक गरिमा और उत्कृष्ट मननशीलता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। हम आभारी हैं उन वरिष्ठ साहित्यकारों के जिन्होंने हमारी गोष्ठियों में समय-समय पर उपस्थित रहकर हमें प्रोत्साहित करने के साथ ही हमारा मार्गदर्शन भी किया है। विश्वास है उनका आशीष हमें भविष्य में भी मिलता रहेगा। आवश्यकता है ऐसे नव-हस्ताक्षरों के निःस्वार्थ साथ का जिनकी अभिरुचि गम्भीर तथा स्वच्छ साहित्यिक लेखन में है। यदि हम अपने आदर्शों और उद्देश्य से विमुख नहीं हुए तो हमारी यह मनोकामना भी अवश्य पूरी होगी।

ओ बी ओ लखनऊ चैप्टर के युयुत्सु

डॉ. गोपाल नारायण श्रीवास्तव

जन्मः 09 जून 1953, रायबरेली (उ.प्र.)
शिक्षाः हिंदी में एम.ए. पी-एच.डी.
मोबाईलः 9795518586

उ.प्र. शिक्षा विभाग से सेवानिवृत। 'हिंदी साहित्य में राना बेनीमाधव बख्श सिंह की परिकल्पना' विषय पर शोध। हिन्दी लेख, निबंध, कहानी, व्यंग्य, कविता आदि सभी विधाओं में आपकी गंभीर साहित्य साधना। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी शताधिक रचनाएँ प्रकाशित तथा आकाशवाणी, लखनऊ द्वारा आपकी अनेक वार्ताओं का प्रसारण। 'पिछली बातें' पत्रिका का सम्पादन। 'रामेश्वर दयाल दुबे –व्यक्तित्व एवं कृतित्व' नामक पुस्तक के सम्पादकीय मंडल में। सम्प्रति हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में नयी शुरुआत। आपका कविता संग्रह 'मनस विहंगम् आतुर डैने' शीघ्र प्रकाश्य।
ईमेलः srivastavagopalnarain@gmail.com

श्री प्रदीप कुमार शुक्ल

जन्मः 07 जून 1979, लखनऊ (उ.प्र.)
शिक्षाः एम.टेक
मोबाईलः 9452002150

केंद्र सरकार के रक्षा अनुसंधान संस्थान में अधिकारी. मौलिक विषयों पर चिंतन तथा गीत व काव्य रचना.
ईमेलः pkshukla2@hotmail.com

नवीन मणि त्रिपाठी

जन्मः 01 जनवरी 1975, बस्ती (उ.प्र.)
शिक्षाः एम.ए.
मोबाईलः 9839626686

कानपुर के ऑर्डनांस फैक्टरी में जे.ई. के पद पर कार्यरत। गीत, कविता, ग़ज़ल के क्षेत्र में समान रूप से दक्ष व्यक्तित्व। ज्योतिष शास्त्र तथा बाँसुरी वादन में सिद्धहस्त। कानपुर मंडल के कवियों में आपका स्थान विशेष। आपकी गेयता प्रभावित करती है।
ईमेलः naveentripathi35@gmail.com

वीनस केसरी

जन्मः 01 मार्च 1985, इलाहाबाद (उ.प्र.)
शिक्षाः स्नातक
मोबाईलः 9453004398

स्वतंत्र रूप से पुस्तक प्रकाशन से जुड़े हुए ये युवा व्यवसायी ग़ज़ल एवं अरूज़ शास्त्र की दुनिया में एक सुपरिचित नाम हैं। उर्दू-हिन्दी में उत्कृष्ट ग़ज़ल लेखन। आपकी इन्हीं विधाओं पर एक पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है। ईमेलः venuskesari@gmail.com

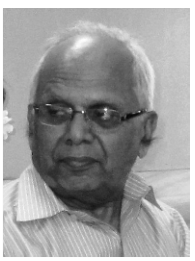

सुरेश चंद्र ब्रह्मचारी

जन्मः 01 जनवरी 1950, गोरखपुर (उ.प्र.)
शिक्षाः भूविज्ञान में परास्नातक तथा अर्थशास्त्र में एम.ए.
मोबाईलः 9415113453

उत्तर प्रदेश सरकार के भूविज्ञान तथा खनन निदेशालय के सेवानिवृत उच्चाधिकारी। सम्प्रति भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के विशेषज्ञ समिति के सदस्य। प्रेम एवं प्रकृति पर सरल, मनोहारी रचना लिखते हैं। यत्र-तत्र साझा संकलन और पत्रिकाओं में प्रकाशित। ईमेलः scbrahmachari@gmail.com

श्रीमती कुंती मुकर्जी

जन्मः 04 जनवरी 1956, ब्रिज़ी वेज़िएर, मॉरीशस (हिंद महासागर)
मोबाईलः 9717116167

शिक्षाः मूल रूप से फ्रेंच भाषा में शिक्षित। बाद में मॉरीशस हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा संचालित प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन की विशारद मध्यमा तथा साहित्य रत्न उत्तमा परीक्षाएँ उत्तीर्ण। बहुत छोटी उम्र से लेखनी सक्रिय। प्रकृति प्रेम तथा नारी के प्रति संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं आपकी रचनाएँ। प्रकाशित कृति – 'बंजारन' (काव्य संग्रह) तथा 'परों को खोलते हुए-1' (साझा संकलन) में कुछ मुक्त छंद की कविताएँ। अंतर्जाल की दुनिया में अपनी गम्भीर क्षणिकाओं द्वारा उपस्थित व चर्चित। एक उपन्यास और एक कहानी संग्रह शीघ्र प्रकाश्य।
ईमेलः coonteesharad@gmail.com

श्रीमती संध्या सिंह
जन्मः 20 जुलाई 1958, सहारनपुर (उ.प्र.)
शिक्षाः विज्ञान स्नातक
मोबाईलः 7388178459

गृहिणी। गीत तथा मुक्त छंद की रचनाओं के माध्यम से संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति में सिद्धहस्त शिल्पी। प्रकाशित कृतियाँ – 'आखरों के शगुन पंछी' (काव्य संग्रह) तथा 'समवेत परिदृश्य' (सह-संपादन) ईमेलः sandhya.20july@gmail.com

श्रीमती अन्नपूर्णा बाजपेई 'अंजु'
जन्मः 04 सितम्बर 1968, लखनऊ (उ.प्र.)
मोबाईलः 9236555679

गृहिणी। पठन, पाठन, लेखन, पर्यटन, साज-सज्जा में विशेष अभिरुचि. साहित्य की नाना विधाओं में रचनाकर्म। ब्लॉग रत्न, मुक्तक श्री, मुक्तक शिल्पी आदि विभिन्न सम्मान से सम्मानित. ईमेलः annapurna409@gmail.com

मनोज शुक्ल 'मनुज'
जन्मः 04 अगस्त 1971, लखीमपुर-खीरी (उ.प्र.)
शिक्षाः वाणिज्य परास्नातक एवं शिक्षा स्नातक
मोबाईलः 9305258091

उत्तर प्रदेश सरकार में कार्यरत युवा रचनाकार. खड़ीबोली तथा अवधी दोनों में छांदसिक रचनाओं के सुपरिचित काव्य-शिल्पी. अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध. प्रकाशित कृति–'मैंने जीवन पृष्ठ टटोले'. ईमेलःgola_manuj@yahoo.in

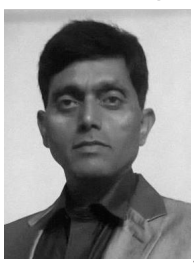

केवल प्रसाद 'सत्यम'
जन्मः 10 जुलाई 1963, लखनऊ (उ.प्र.)
शिक्षाः कला स्नातक
मोबाईलः 9415541353

उत्तर प्रदेश सरकार के पी.डब्ल्यू.डी. में प्रशासनिक अधिकारी। छांदसिक रचनाओं में विशेष रुचि तथा नियमित लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से संबद्ध। खेलकूद में विशेष अभिरुचि। बाल-साहित्य की रचना में कुशल। ओ बी ओ से अभिन्न रूप से जुड़े।
ईमेलः satyamkewalprasad@gmail.com

धीरज मिश्र
जन्मः 27 अपैल 1990, दौलतपुर, रायबरेली (उ.प्र.)
शिक्षाः राजनीति शास्त्र में परास्नातक
मोबाईलः 8423114555, 9026384777

मार्शल आर्ट्स प्रशिक्षक। आप ऐसे युवा रचनाकार हैं जो छांदसिक रचनाओं में दखल रखते हैं। सुन्दर-वाचन एवं गायन। साहित्य के साथ-साथ अभिनय में भी रुचि। 'अट्टहास' पत्रिका के उपसम्पादक.
ईमेलः dheerajkmish@gmail.com

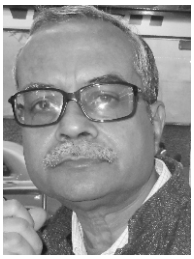

डॉ. शरदिंदु मुकर्जी
जन्मः 09 नवम्बर 1951, सीतापुर (उ.प्र.)
शिक्षाः भूविज्ञान में परास्नातक व पी-एच.डी.
मोबाईलः 9935394949

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के सेवानिवृत अधिकारी। साहित्य पठन-पाठन, बांग्ला तथा हिंदी में कदाचित लेखन और भ्रमण में विशेष अभिरुचि। साझा काव्य संकलन 'परों को खोलते हुए-1' में कुछ मुक्त छंद की रचनाएँ प्रकाशित। बांग्ला, अंग्रेज़ी तथा हिंदी में कुछ लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अंटार्कटिका के अनुभवों पर आधारित पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य।ईमेलः sharadcoontee@gmail.com

सौरभ पाण्डेय
जन्मः 03 दिसम्बर 1963, देवघर (झारखण्ड)
शिक्षाः एम.बी.ए., डिप्लोमा इन सॉफ़्टवेयर, विज्ञान स्नातक
मोबाईलः 9919889911

राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न कॉर्पोरेट इकाईयों में कार्यरत। सुकवि जो गीत, आधुनिक कविता, ग़ज़ल आदि विधाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं। छंद व्याकरण पर आपकी पकड़ आपको विशेष धरातल पर उपस्थापित करती है। प्रकाशित कृतियाँ – 'परों को खोलते हुए-1' (सम्पादन); 'इकड़ियाँ जेबी से' (काव्य संकलन); 'छंद मंजरी' (आलोचना). ईमेलः saurabh312@gmail.com

श्री पवन कुमार
जन्मः 10अगस्त1990, संत कबीर नगर (उ.प्र.)
शिक्षाः स्नातक
मोबाईलः 9415323017
ईमेलः pkji99@gmail.com

पढ़ाई के साथ-साथ नौकरी करते हुए इस युवा रचनाकार की अभिरुचि सामाजिक कार्य, खेल-कूद और थिएटर में भी है. सरल शब्दों में सहज अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में झलकती है.

अतुकांत कविता

आपने नहीं पहचाना शायद

गिरिराज भंडारी

उड़ानें उसकी बहुत ऊँची हो चुकी हैं
बेशक, बहुत ऊँची
खुशी होती है देख कर
अर्श से फर्श तक पर फड़फड़ाते
बेरोक, बिला झिझक, स्वच्छंद उड़ते देख कर उसे
जिसके नन्हें परों को
कमज़ोर शरीर में उगते हुए देखा है
छोटे-छोटे कमज़ोर परों को मज़बूतियाँ दी थीं
अपने इन्हीं विशाल डैनों से दिया है सहारा उसे
परों को फड़फड़ाने का हुनर बताया था
दिया था हौसला, उसकी शुरुआती स्वाभाविक लड़खड़ाहट को
खुशी तब भी बहुत होती थी
नवांकुरों की कोशिशें देख कर गदगद हो जाता था मन आनन्द से

मगर अफसोस भी है आज, कुछ कुछ
अधिक नहीं, पर है
कुछ की अंधी उड़ानों पर,
नासमझियों पर,
स्वार्थपरता पर,
संवेदनहीनता पर
उड़ाने इतनी ऊँची हैं, कि
नज़र नहीं आती अब ज़मीन भी
वो ज़मीन,
जहाँ पहली उछाल भरी थी उसने परवाज़ के लिये
नहीं दिखते उसे अब वो मज़बूत डैने,
जिन्होंने तब सहायता की थी उड़ने में
नज़र नहीं आते उसे
आज के नौसिखियों के लड़खड़ाते पंख भी
न ही जागती हैं सहारे बन जाने की इच्छायें,
संवेदनायें,
जैसे कोई बना था उसके लिये
न ही झलकता है कोई अहो भाव
किन्हीं बूढ़े होते पंखों के प्रति

दुखद आश्चर्य है मुझे
कोमलता की कोख से जन्म कैसे पा गई
निपट कठोरता, स्वार्थपरता
मै तो बददुआयें भी नहीं दे सकता
कैसे दूँ ? अपने इन्हीं डैनों में खिलाया है उसे
आखिर मैंने ही तो पाल पोस के उसे इतना बड़ा किया है
कुछ एक घूंट कड़वा ही सही
पर मैं तो यही कहूँगा,
खुश रहो ! खूब उड़ो !
मेरे प्यार भरे दिल में कोई जगह ही नहीं है
नफरत के लिये
आपने नहीं पहचाना शायद
मै ओ बी ओ हूँ
आप सबका,
अपना ओ बी ओ

लघु-कथा

उद्घाटन

हरि प्रकाश दुबे

'मंत्री जी, शानदार पुल बनकर तैयार है, आपके नाम की शिला भी रखवा दी है, बस जल्दी से उद्घाटन कर दीजिये !'

'अरे यार देख रहे हो कितना व्यस्त चल रहा हूँ आजकल, हिसाब- किताब तो हो गया है न, फिर तुम्हें उद्घाटन की इतनी चिंता क्यों है ?'

'साहब, चिंता उद्घाटन की नहीं है, बारिश की है !'

दो कविताएँ

विजय निकोर

काल-धारा

मेरा स्नेह तुम्हारी ज़िन्दगी के पन्ने पर देर तक
स्वयं-सिद्ध, अनुबद्ध
हलके-से हाशिये-सा रहा यह ज़ाहिर है
ज़ाहिर यह भी कि जब कभी
अपने ही अनुभवों के भावों के घावों को
विषमताओं से विवश तुम चाह कर भी
छिपा न सकी
हाशिये को मिटा न सकी
मिटाने के असफ़ल प्रयास में तुम
घुल-घुल कर, मिट-मिट कर
ऐंठन में हर-बार कुछ और
स्वयं ही टूटती-सी गई
टूटने और मिटने के इस क्रम में
हाशिये में कभी झोल-सा पड़ा दर्द का
कभी उसकी पारमिता,
उसकी दृढ़ता, उसकी गहराई
बढ़ती निखरती तुम्हारे अस्तित्व के गिर्द
ज़िद्दी बेल-सी लिपटती चली गई
समय की थिरकती-सिहरती थपथपी
अदृश्य तुम्हारे अश्रुओं की कँपकँपी ...
मानव-सम्बन्ध के सहज आनंद की
पूजा के दिये की लौ सी अरुणायित शोभा ...
यह हाशिया भी अब वही हाशिया न रहा
मिटाय-न-मिटते जामुन के पक्के
रंग-से-रंगे कपड़े-सा
तुम्हारे शुद्धतम आँचल-सा विशुद्ध स्नेह मेरा
अब हृदय-प्रकाश तुम्हारा बना, और
गहन विश्वास की तहों में स्नेह तुम्हारा
मेरे हृदय की कमल-पँखुरी में है समाया
आत्माओं में बहती-सी लगती है नई उमंग
सोचता हूँ यह नियति की अनुभूति है या
है यह बहती सुखप्रद प्रतिपल
असामान्य जगत-काल-धारा...

आसमानी फ़ासले

बच्चों-सा स्वप्निल स्वाभाविक संवाद
हमारी बातों में मिठास की आभा
ताज़े फूलों की खुशबू-सी निखरती
सुखद अनुभवों की छवियाँ ...

हो चुकीं इतिहास
समय-असमय अब अप्रभाषित
शून्य-सा मुझको लघु-अल्प बनाती
अस्तित्व को अनस्तित्व करती
निज अहं को आदतन संवारती
आलोचनाशील असंवेदनशीलता तुम्हारी

अब बातें हमारी टूटी कटी-कटी ...
बीते दिनों की स्मृतियाँ पसार

मानवीय उलझनों के पठार
कर देते बेहद उदास
टूटे विश्वासों के विक्षोभों की अनथक गहरी पीर
इस पर भी सौन्दर्य-संध्या में मंदिर में
तुम्हारे लिए नित्य अनवरत अनंत प्रार्थना

सुख की याचना
अकेली-सुनसान रातों जलती है ढिबरी
राख रिश्ते की वीरानी
हथेली पर अशेष, जलते गर्म फफोले
तुम्हारी पहचान से अनदेखी

चट्टानी चोट, ज़िन्दगी की दलदल

फूटते कसकते बुलबुले, ठोकर से अकुलाते
पैर-अंगूठे के उखड़े नख का दर्द ...

ग़ज़ल

दो ग़ज़लें

मिथिलेश वामनकर

:: 1 ::

समंदर पार वालों ने हमारा फ़न नहीं देखा
जवाँ अहले वतन ने आज तक बचपन नहीं देखा

जुरूरी था, वही देखा, ज़माने की जुबानों में
कि मीठी बात देखी है कसैलापन नहीं देखा

तबस्सुम देख के मेरी, तसल्ली हो गई उनको
हमारी आँख में सोया हुआ सावन नहीं देखा

निजामत का भला अपना वतन कैसा ख़ियाबां है
कि जिसमें गुल नहीं देखे कहीं गुलशन नहीं देखा

खुदी को देख के वो तो यकीनन खौफ खा जाती
किसी भी रात ने कोई कभी दरपन नहीं देखा

गुजारिश है गुजारे की, गिरां कोई नहीं मांगी
तसव्वुर में जहां ऐसा कभी जबरन नहीं देखा

ज़रा तन्हा अगर छोड़ा जहां ने रो दिए साहिब
यतीमों का कभी तुमने अकेलापन नहीं देखा

जियारत क्या, परस्तिश क्या, अकीदत क्या, इबादत क्या
किसी मासूम बच्चे का अगर चितवन नहीं देखा

:: 2 ::

ग़ज़ल ने यूँ पुकारा है मेरे अल्फाज़, आ जाओ
कफ़स में चीख सी उठती, मेरी परवाज़ आ जाओ

चमन में फूल खिलने को, शज़र से शाख कहती है
बहारों अब रहो मत इस कदर नाराज़ आ जाओ

किसी दिन ज़िन्दगी के पास बैठो, बात हो जाए
खुदी से यार मिलने का करें आगाज़, आ जाओ

भला ये फ़ासले क्या हैं, भला ये कुर्बतें क्या हैं
बताएँगे छुपे क्या-क्या दिलों में राज़, आ जाओ

हमारे बाद फिर महफिल सजा लेना ज़माने की
तबीयत हो चली यारों जरा नासाज़, आ जाओ

अकीदत में मुहब्बत है सनम मेरा खुदा होगा
अरे दिल हरकतें ऐसी ज़रा सा बाज़ आ जाओ

मरासिम है गज़ब का मौज़ से, साहिल परेशां है
समंदर रेत को आवाज़ दे- 'हमराज़ आ जाओ'

खुशी 'मिथिलेश' अपनी तो हमेशा बेवफा निकली
ग़मों ने फिर पुकारा है- 'मिरे सरताज़ आ जाओ'

ग़ज़ल

दो ग़ज़लें

शिज्जु शकूर

:: 1 ::

सफर ये राहगुज़र और ये मुकाम नया।
हयात देती है अक्सर मुझे यूँ काम नया।

अगर नसीब से बच पाये तो गनीमत है,
यहाँ हर एक कदम पर है एक दाम नया।

न जी सके अभी तक चलिये कोई बात नहीं,
करें अब के कोई जीने का एहतमाम नया।

ये ज़िन्दगी हो फ़ना रोज़ और रोज़ शुरू,
गुरूबे शम्स हो तो चाँद निकले शाम नया।

बहुत हुये गमे दौराँ की नज्में ये शिकवे,
चलो कहें कि मसर्रत का इक कलाम नया।

गुज़रते वक्त से चुनकर कोई पल ऐ हमराह,
चलो कि ज़िन्दगी को दें हम एक नाम नया।

:: 2 ::

हर सम्त आस पास गुलिस्तान बन गये।
ये माहो शम्स गुल मेरी पहचान बन गये।

जो लोग शह्र फूँक के नादान बन गये।
बदकिस्मती से आज निगहबान बन गये।

चमके तो मेह्र बन गये जो आसमान की,
वो आँखों में उतरते ही अरमान बन गये।

जिनकी ज़बाँ उगलती रही ज़ह्र अब तलक,
कैसे ये मान लूँ कि वो इंसान बन गये।

सूरत बदल गई कि निगाहें मेरी 'शकूर',
आईने देख कर मुझे अंजान बन गये।

पवन कुमार

लघु-कथा

अपनी दीवाली

'माँ ! मैं सुबह ही सभी के घर जाकर दिये में बचे हुए तेल इकठ्ठा कर लाया हूँ।
अब तो पूड़ी बन जायेगी ना?

ग़ज़ल

दो ग़ज़लें

आलोक रावत 'आहत लखनवी'

:: 1 ::

मेरी ज़िन्दगी में उजाले बहुत हैं
मगर मेरी आँखों में जाले बहुत हैं

सबक़ दे रहे हो उन्हें ज़िन्दगी का
कि जिनके लिये दो निवाले बहुत हैं

मिटा पाओगे कैसे मेरी इबादत
मेरे दिल में मस्जिद–शिवाले बहुत हैं

हर इक मोड़ पर ही फिसलने का डर है
ये रस्ते वफ़ा के निराले बहुत हैं

हैं कहने को सच के नुमाइन्दे बेशक
मगर उनके होंठों पे ताले बहुत हैं

ये रहने भी दो अपने अश्के-मुरव्वत
मेरी मौत पर रोने वाले बहुत हैं

:: 2 ::

जब भी खेतों में धान मरता है
साथ उसके किसान मरता है

कहाँ मरते हैं मुसलमां-हिन्दू
मेरा हिन्दोस्तान मरता है

ज़िन्दगी क्या है उनसे पूछो तुम
जिनका बेटा जवान मरता है

झूठ की खंजरी दलीलों से
एक सच्चा बयान मरता है

सिर्फ हम ही नहीं फिदा ए हिन्द
तुम पे सारा जहान मरता है

क़ैद में तड़पा परिन्दा 'आहत'
बेज़ुबाँ बेउड़ान मरता है

:: 3 ::

ईमान से तस्वीर बनाई नहीं गई
जो बात सच थी सामने लाई नहीं गई

बच्चे न समझ पाये मुहब्बत की नज़ाकत
और राह बुज़ुर्गो से दिखाई नहीं गई

क़िस्से बयाँ किये गये नफ़रत के बार बार
तस्वीर मुहब्बत की दिखाई नहीं गई

दूरियाँ बढ़ती हैं अदावत से दिलों में
ये बात सलीक़े से बताई नहीं गई

औरत पे अपना हक़ तो जताया गया मगर
औरत के हक़ में बात उठाई नहीं गई

अपने ही लिये सोचता इन्सान रह गया
इन्सान के दिल से ये बुराई नहीं गई

शहरों में लगी आग बुझी है न बुझेगी
गर दिल में लगी आग बुझाई नहीं गई

वो मेरी मुहब्बत को हंसी में उड़ा गये
हमसे हंसी में बात उड़ाई नहीं गई

ये सच है कि वो मुझसे जुदा हो गया 'आहत'
इस दिल से कभी भी वो जुदाई नहीं गई

ग़ज़ल

दो ग़ज़लें

राणा प्रताप सिंह

:: 1 ::

जो हमें बरसों से हरदम चीट ही करते रहे।
मस्अले दर मस्अले वो ट्वीट ही करते रहे।

खर्च करने के लिए इमदाद में आई रकम,
पंचतारा होटलों में मीट ही करते रहे।

जो हमें समझा किये कीड़े मकोड़ों की तरह,
हम खुदा की तरह उनको ट्रीट ही करते रहे।

नाम उनका हर दफे ही लिस्ट से गायब रहा,
साल के दर साल वो कम्पीट ही करते रहे।

हमने आपस में जिसे था कब का ही सुलझा लिया,
वो उसी मुद्दे को हरदम हीट ही करते रहे।

:: 2 ::

वो एवज में हिकारत के फकत मुस्कान देता था
ज़माना जिसको नफ़रत ही सुबह औ' शाम देता था

उसे मुजरिम समझता था न जाने किस गुनह का मैं
न जाने किस तरह के उसको मैं इल्जाम देता था।

मेरी गुस्ताखियाँ नादानियाँ हंसकर भुला देता
मुझे अपनी दुआओं का सदा ईनाम देता था।

वो खुद बैठा रहा पिछले सफों पर उम्र भर सारी
उसे मख़दूम लेकिन सब ज़माना नाम देता था।

हवाएँ सर्द गुरबत की तपिश की खा गयी उसको
जो कितने सूरजों को अपने घर में काम देता था

छंद

कुण्डलिया

अरुण कुमार निगम

1

पिसते हरदम ही रहे, मन में पाले टीस
तुझको भी मौका मिला, तू भी ले अब पीस
तू भी ले अब पीस, बना कर खा ले रोटी
हम चालों के बीच, सदा चौसर की गोटी
पूछ रहा विश्वास, कहाँ बदला है मौसम।
घुन गेहूँ के साथ, रहे हैं पिसते हरदम।

2

बिल्ली है सम्मुख खड़ी, घंटी बाँधे कौन
एक अदद इस प्रश्न पर, सारे चूहे मौन
सारे चूहे मौन, घंटियाँ शंख बजाते
मजबूरी में नित्य, आरती सारे गाते
लिया सभी ने जान, दूर काफी है दिल्ली
घंटी बाँधे कौन, खड़ी सम्मुख है बिल्ली।

छंद

राष्ट्रीय गीत

राज बुन्देली

राष्ट्र-वन्दना के स्वर फिर से, वीणाओं में गूँजेंगे।
शीश चढ़ाकर अगणित बेटे, भारत माँ को पूजेंगे।
षड़यंत्रों नें बाँध रखा है, आज हिन्द को घेरे में।
मानवता का दीप जलायें, आओ सभी अँधेरे में।
अपने अपने धर्म देवता, लगते सबको प्यारे हैं।
जितने प्यारे प्राण हमारे, उतने सबके प्यारे हैं।
राजनीति के आकाओं नें, कुछ ढोंगी बाबाओं ने।
भेद-भाव सिखलाया सबको, इन मतलबी सभाओं ने।
नीला-अम्बर देख रहा है, बदली - बदली काया है।
एक धरा है एक गगन है, एक ब्रह्म की माया है।
मनमर्ज़ी से फिर नर कैसे, पशुवत तर्क बना बैठा।
इतने सुन्दर जीवन को वह, खुद ही नर्क बना बैठा।
बैर-भाव से भरा लबालब, ये विष पात्र नहीं पीना।
हिन्दू,मुस्लिम,सिख, ईसाई, बनकर मात्र नहीं जीना।
आओ मिलकर करें प्रतिज्ञा, समता राष्ट्र बनायेंगे।
धर्म-वाद से मुक्त देश में, दीपक दिव्य जलायेंगे।

छंद

घनाक्षरी

मनोज कुमार शुक्ला 'मनुज'

राम-नाम महिमा

राम नाम ही नहीं है मंत्र है अमोघ दिव्य
पाप हर लेता मेट देता मन से है काम
कामना रहित कर्म की ही सीख देता सदा
भक्ति, यश,वैभव का देता है मनोज्ञ धाम
क्षण मात्र में संवारता है छवि जीवन की
तृण के समान छूट जाता सब ताम-झाम
काम,क्रोध,लोभ,मोह, मद से बचाता और
पावन बनाता मन मंदिर को राम नाम

छंद

सवैया

डॉ. गोपाल नारायन श्रीवास्तव

अरसात सवैया

तात न वात, न गात सुखात, न चैन इहाँ कछु भी तुम पाइयो
भोजन पाय, सनेह सु नाथ, कछू गुन ईश्वर के तब गाइयो
बिस्तर आज लगा घर बाहर, शंक नहीं मन में तुम लाइयो
ग्रीष्म प्रचंड दहावत है, तुम और दहावन रात न आइयो

सुन्दरी सवैया

सखि फूलत सांस, बढ़ी अति हाँफनि और चढ़ा विष सा कछु लागे
रजनी भर नींद परी न कभी, द्वय लोचन आलि निशा भर जागे
सिगरी यह देह पसेउ भरी, सब अंग अधीर पिरात अभागे
पिय संग मिलाप--? नहीं सखि है यह ग्रीषम तात कृशानु के लागे

दो नवगीत

सौरभ पाण्डेय

शब्द के व्यापार में

पूछता है द्वार चौखट से --
कहो, कितना खुलूँ मैं !

सोच ही में लक्ष्य से मिलकर
बजाता जोर ताली
या, अघाया चित्त
लोंदे सा,
पड़ा करता जुगाली.

मान ही को छटपटाता,
सोचता-- कितना तुलूँ मैं !

घन पटे दिन
चीखते हैं -- रे,
पड़ा रह तन सिकोड़े..
काम ऐसा क्या किया, पातक !
कि व्रत में रस सपोड़े !

किन्तु, ले शक्कर हृदय में
कुछ बता कितना घुलूँ मैं

शब्द के व्यापार में है रत
किये का स्वर
अहं है
इस गगन में राह भूला वो
अटल ध्रुव
जो स्वयं है !

अब मुझे, संसार,
कह आखिर.. .कहाँ कितना धुलूँ मैं!

बारिश की धूप

सूरज कर्कश चीखे दम भर
दिन बरसाती धूल दोपहर...।

उमस कोंसती
दोपहरी की
बेबस आँखों का भर आना
आलमिरे की
हर चिट्ठी से
बेसुध हो कर फिर बतियाना...

राह देखता क्यों उसकी
ये पगला साँकल रह-रह हिल कर।

चुप-चुप दिखती-सी पलकों में
कबसे एक
पता बसता है
जाने क्यों
हर आनेवाला
राह बताता-सा लगता है

पलकें राह लिये जीतीं हैं
बढ़ जाता हर कोई सुनकर।

गुच्ची-गड्ढे
उथले रिश्ते
आपसदारी कीचड़-कीचड़
पेड़-पेड़ पर दीमक-बस्ती
घाव हृदय के बेतुक बीहड़.. .
बोझिल क्षण ले मन का बढ़ना
नम पगडंडी
सहम-बिदक कर।

नवगीत

सपनों की ज़िद पत्थर जैसी

संध्या सिंह

कस कर नाव
बंधी खूंटे से
इच्छा मगर
समंदर जैसी
उम्र भले जल की धारा हो
सपनों की ज़िद पत्थर जैसी

जीवन की पुस्तक के भीतर
गम के हैं अध्याय अधिकतर
घाव पीर दुःख दर्द खड़े हैं
संघर्षों के संकरे पथ पर

लेकिन भर के
घूँट कसैले
मुस्काने हैं
शक्कर जैसी
उम्र भले जल की धारा हो
सपनों की ज़िद पत्थर जैसी

सागर में भावों की लहरें
मगर शब्द सब तट पर ठहरे
उड़ा दूर तक मन पाखी सा
धरे रहे तन के सब पहरे

देह कैद है
पातालों में
पर अभिलाषा
अम्बर जैसी

उम्र भले जल की धारा हो
सपनों की ज़िद पत्थर जैसी

नवगीत

सत्य पिरो लूँ

डॉ. प्राची सिंह

अहसासों को
प्रज्ञ तुला पर कब तक तोलूँ
चुप रह जाऊँ
या अन्तः स्वर मुखरित बोलूँ

जटिल बहुत है
सत्य निरखना-
नयन झरोखा रूढ़ि मढ़ा है,
यद्यपि भावों की भाषा में
स्वर आवृति को खूब पढ़ा है

प्रतिध्वनियों के
गुंजन पर इतराती डोलूँ

प्राण पगा स्वर
स्वप्न धुरी पर
नित्य जहाँ अनुभाव प्रखर है
क्षणभंगुरता - सत्य टीसता
सम्मोहन की ठाँव, मगर है

भाव भूमि पर
आदि-अंत के तार टटोलूँ

श्वास-श्वास में
कण-कण जीवन
जी लेने की रख अभिलाषा,
अंतर्मन ही छद्म जिया यदि
जीवन की फिर क्या परिभाषा

निज संचय में
मणिक-मणिक सम सत्य पिरो लूँ

गीत

एक गीत

धीरज मिश्र

जीवन दीपक लौ तेज़ हुई जलती थी जो मद्धम मद्धम।
मन का मयूर फिर नाच उठा देखा तेरा मुखड़ा प्रियतम।
यौवन का मधुरिम रस बरसा,
जिसकी ख़ातिर बरसों तरसा।
तुमने जीवन्त किया मुझको,
इसके पहले था पत्थर सा।

अन्तर्मन सातों सुर भरती तेरी पायलिया की छम छम।
मन का मयूर फिर नाच उठा देखा तेरा मुखड़ा प्रियतम।
गालों पर खेल रहीं अलकें,
उठती गिरती मुँदती पलकें।
अधरों पर मधु मुस्कान लिये,
नयनों से प्रेम रंग छलकें।

कैसे गाऊँ तेरी छवि को अद्भुत सुन्दर अप्रतिम अनुपम।
मन का मयूर फिर नाच उठा देखा तेरा मुखड़ा प्रियतम।
तुमसे मिल कर मैंने जाना,
अतुलित है प्रेम स्वयं माना।
गीतों में नव शृंगार लिये,
फिरता हूँ बन कर दीवाना।

अब सदा प्रतीक्षारत रहता कब होगा मनभावन संगम।
मन का मयूर फिर नाच उठा देखा तेरा मुखड़ा प्रियतम।

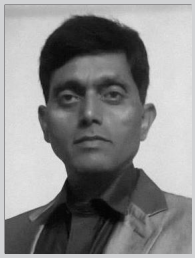

बाल गीत व लोरी गीत

एक बाल गीत

केवल प्रसाद 'सत्यम'

बाल गीत-ईशान

ईशान था इक छोटा बच्चा
कर्मठता में बिलकुल सच्चा।।
रोज सबेरे उठ जाता था
सही समय पढ़ने जाता था।।

नहीं अक्ल का था वह कच्चा
बड़े – बड़ों को देता गच्चा।
इक दिन एक अजनबी आया
टिफिन साइकिल में रख लाया।

बोला, ईशान बेटा आओ
चाकलेट, तुम सब खा जाओ।
ईशान ने दो पल सोचा
मुझको इसमें लगता लोचा।

बोला अंकल जी, रुक जाना
मित्रों संग मुझको है खाना।
जाकर उन्हें बुलाता हूँ मैं
झटपट-सरपट आता हूँ मैं।

इतना कहकर फिर वह भागा
उसका अवचेतन था जागा।
गुरु को जाकर हाल बताया।
कोई एक अजनबी आया।

चाकलेट वह दिखलाता है
बच्चों को वह फुसलाता है।
गुरु ने अपना काम दिखाया
चुपके-चुपके पुलिस बुलाया।

पकड़ा गया अजनबी भाई
आतंकी की हुई धुनाई।
कर्मठता में छिपी सफलता
बुद्धि-ज्ञान सचमुच है फलता।

जो ईशान सदृश है होता
उदासीन वह कभी न सोता।
बाल वही सबको मन भाए
जो अपना कर्तव्य निभाए।

लोरी गीत

आ जा रे आ जा निंदिया रानी, भइया को सुला जा निंदिया रानी।

चन्दा की चाँदनी चहुं दिश तुम्हारी, रश्मि और किरने बहने तुम्हारी।
मस्त गगन की तारावलियां तुम्हारी, धरती के पास आ जा तारों के संग-
अपनी निंदिया सजा री! निंदिया रानी।

ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ की नदिया, नन्दन कानन की पतली पगडंडियाँ।
पंछी और जानवर साथी तुम्हारे, भइया के पास आ जा चिड़ियों के संग-
अपनी बतियां बता री निंदिया रानी।

परियों के देश की परियां सजीली, सागर मछलियों की दुनियां पहेली।
बाग-बागीचों में मोर को नचा री, परियों के रथ बैठ भइया के संग-
अपनी दुनिया घुमा री! निंदिया रानी।

सपनों के स्वर्ग में घोड़ा उड़ेगा, परियों के साथ में खेलना पड़ेगा।
शेरों के दांत गिन हाथी पछाड़ेगा, गगन में नहाये सभी तारों के संग
अपनी दुनिया सजा री! निंदिया रानी,
भइया को सुला जा निंदिया रानी।

लघु-कथा

तीन लघु-कथाएँ

विनय कुमार सिंह

खुशखबरी

'बेटा, अब दूसरे विवाह की तैयारी करो, इससे तो कुछ होना नहीं है'।
'लेकिन माँ, दूसरे में भी क्या भरोसा, थोड़ा और सबर करो', और बात आई गयी हो गयी।
कुछ महीनों बाद खुश खबरी थी, माँ बहुत प्रसन्न हुई।
और बेटे का दोस्त जो कुछ दिनों पहले आया था, अचानक वापस चला गया।

विकलांगता

'देखो तो, आज माँ के लिए मैं क्या लाया हूँ। '
'क्या जरुरत थी माताजी को इतनी बढ़िया साड़ी लाने की!', पत्नी की आवाज में आश्चर्य झलक रहा था।
'माँ की आँखें नहीं हैं लेकिन मेरी तो हैं ना।

अंतर

'डाक्टर साहब, ये बच्ची हमें नहीं चाहिए', बोलते हुए उस महिला की आँखों में आँसू आ गए थे।
'देखो, बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं है और अब देर भी काफी हो गयी है, तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है'।
'आप तो एबॉर्शन कर दीजिये, और कौन सी हमारे बेटे की उमर निकल गयी है, सास ने ठन्डे स्वर में कहा

लघु-कथा

दर्द

मीना पाठक

कल से बहू के सर में दर्द था। उसकी सास कलावती बेचैन थी। कभी बहू का सर दबाती। कभी उसके बालों में स्नेह से उंगलियाँ फिराती। कभी उसे दिलासा देते हुए कहती - 'परेशान न हो बेटा..अभी दवा दी है। जल्दी ही दर्द ठीक हो जाएगा। दवा और स्नेह का असर हुआ और बहू शाम तक बिल्कुल ठीक हो गई थी। आज सुबह से ही कलावती अपने बिस्तर पर ड्यूडनल अल्सर के दर्द से तड़प रही है। वह रह रह कर कराहती है और बार-बार आस भरी निगाहों से बहू के कमरे का दरवाजा निहारती है। वह दवा भी लेना चाहती है, पर हिम्मत नहीं पड़ रही। बहू ने द्वार खोलकर झांका –'माँ जी क्या शोर मचा रखा है। मैं सीरियल नहीं देख पा रही। अल्सर का दर्द है न शाम तक ठीक हो जाएगा। आप परहेज तो करती नहीं। ' –इतना कहकर बहू ने अपने कमरे का दरवाजा फटाक से बंद कर लिया।

लघु-कथा

दादी हामिद और ईद

सौरभ पाण्डेय

हामिद अब बड़ा हो गया है. अच्छा कमाता है. गल्फ़ में है न आजकल !
इस बार की ईद में हामिद वहीं से 'फूड-प्रोसेसर' ले आया है, कुछ और बुढ़िया गयी अपनी दादी अमीना के लिए ! ममता में अघायी पगली की दोनों आँखें रह-रह कर गंगा-जमुना हुई जा रही हैं। बार-बार आशीषों से नवाज़ रही है बुढ़िया। अमीना को आज भी वो ईद खूब याद है जब हामिद उसके लिए ईदग़ाह के मेले से चिमटा मोल ले आया था। हामिद का वो चिमटा आज भी उसकी 'जान' है।
'.. कितना खयाल रखता है हामिद ! .. अब उसे रसोई के 'बखत' जियादा जूझना नहीं पड़ेगा.. जब हामिद वापस चला जायेगा, अपनी बहुरिया के साथ, अपने बेटे के साथ..'

बुरांश के सौन्दर्य से अभिभूत मैं

कुंती मुकर्जी

उत्तराखंड के हरे-भरे जंगलों के बीच चटक लाल रंग के बुरांश के फूलों का खिलना पहाड़ में बसंत ऋतु के यौवन का सूचक है। इन दिनों पहाड़ के जंगल बुरांश के सुर्ख फूलों से लद जाते हैं।

-संपादक

'धुंध में.... वीराने जंगल में कभी...
कभी सपाट मैदान में गुम होती..
रेल की लम्बी लाइन....
जादू सी चलती मुझे खींच ले जाती है
बहुत धीरे...कानों में गुनगुनाती है....
आओ!...आओ!!....आओ!!!.....
मैं सम्मोहित सी चल पड़ती हूँ..,,पीछे...!' - कुंती

यात्रा बहुत ही सुंदर शब्द है - रोमांचक और आकर्षक भी। शायद ही कुछ लोग होंगे जो यात्रा करना पसंद न करते होंगे। लेकिन, यात्रा करने के लिये जहाँ दो पैरों की ज़रूरत होती है उससे कहीं ज्यादा मन और बुद्धि की एकाग्रता की ज़रूरत होती है। विपरीत स्थिति में यात्रा करना महज अपने तमाम उम्र के कुछ लम्हों को यूँ ही गँवा देना है। मुझे याद आता है कि पिछले साल जब मैं कौसानी अनासक्ति आश्रम गयी थी तो वहाँ के एक विशाल देवदार के नीचे बैठकर पत्तों की मर्मराहट सुन रही थी। वातावरण एकदम शांत था। मैं अपनी आँखें बंद कर अपने दिल की गहराई से उस मर्मराहट की भाषा को समझने की कोशिश कर रही थी। तभी मुझे एक शादी-शुदा जोड़े के झगड़ने की कर्कश आवाज़ सुनायी दी। पत्नी कह रही थी-

''तुम मुझे कहाँ ले आये..? मैं यहाँ क्या देखूँ..? क्या खाऊँ..?''

पति अपराधी सा खड़ा अपनी नयी दुल्हन की लताड़ सुन रहा था।

कुछ पल के लिये इस दृश्य पर मुझे बहुत हँसी आयी। मैं कुछ दिग्भ्रमित भी हुयी कि कौन मूर्ख है। वह या मैं? कहीं मैं ही तो नहीं जो शहर के आकर्षक मॉल छोड़कर इस देवदार की एकांत मर्मराहट सुनने आयी हूँ। कुछ ही पलों में वह महिला बड़बड़ाती हुयी वहां से चली गयी। अब उस वातावरण में फिर से शांति छा गयी। मैंने देखा कि नीले पंख वाले पक्षी का एक जोड़ा मेरे आसपास फुदक फुदक कर बड़े प्यार से एक दूसरे को लुभाने की कोशिश कर रहा है।

इस साल मैं उत्तराखंड के प्रख्यात 'बुरांश महोत्सव' में आमंत्रित होकर, कौसानी के 'बुरांश रिट्रीट' में ठहरी थी। एक सुबह जब मैंने अपने कक्ष की खिड़की से पर्दा सरकाया तो हठात अवाक् सी रह गयी। मेरी आँखों के सामने स्फटिक सी चमकती विशाल हिमाच्छादित पर्वत श्रेणी नुमायाँ थी जिसमें नंदा देवी, पंचचूली, त्रिशूल, नंदाघुंटी और बहुत सारी हिम चोटियाँ अपने अनुपम सौंदर्य का विकास लिये आकाश को छू रही थीं। हमारे होटल की खिड़की से लगभग दो सौ चालीस किलोमीटर तक फैली यह हिम श्रेणी साफ दिखती थी। मुझे बरबस कवि दिनकर की ये पंक्तियाँ याद आयी –

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट्
पौरुष के पुन्जीभूत ज्वाल
मेरी जननी के हिम-किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

वे भी शायद इन हिम शिखरों का दर्शन कर कभी ऐसे ही अवाक् हुए होंगे। मै यह सोच ही रही थी कि पलक झपकते बादल का एक विशाल टुकड़ा आया और उसने रुपहली चोटियों को अपने आगोश में ले लिया। जिसने यह दृश्य न देखा हो उसे हम कभी समझा न पाएँगे कि हिम-शिखर कितने

रूपों में अपने को प्रकट करता है। बादलों के साथ उनके इस चोर-सिपाही के खेल में कैसा अद्भुत जादू भरा है।

बुरांश सुमनों की छटा

कौसानी में एक तरफ तो ये सफेद चोटियाँ थीं और दूसरी ओर था वादियों में खिलता लाल बुरांश का चटकीला रक्तिम फूल जो अपने अंदर जितनी खुशियाँ समेटे हुए हैं उसके ठीक विपरीत उतना ही ज्यादा दुख और दर्द वहाँ की सुंदर पहाड़ी बालाओं की आँखों में दिखता है, जिसका यत्किंचित साक्षात् मैंने स्वयं अपनी आँखों से किया है। यह कैसा अभिशाप है ? हम एक तथाकथित स्वर्ग से निकलकर दूसरे स्वर्ग की तलाश में यहाँ आते हैं। यहाँ की प्रकृति और उसकी सुंदरता का भरपूर आनंद तो उठाते हैं मगर यहाँ के निवासी विशेषकर बालाओं की आँखों के दर्द को हम नहीं देख पाते या देखकर भी अनदेखा कर देते हैं.

कौसानी से बैजनाथ जाती सड़क के किनारे स्थित 'बुरांश रिट्रीट' में मेरी भेंट ममता थापा से हुई। वह एक सुंदर महिला है जो अपने दुख-दर्द में सिमटी आहों को पहाड़ के बेदर्द मौसम के साथ कुछ इस तरह साझा करती है।

'नैराश्य भरे कदमों से? / जब पास तेरे मैं आऊँ... / अपने बोझिल पलकों में / तेरा सूनापन भर लाऊँ.... / कई दिनों की उदासी लिये / सामने तेरे लहराऊँ....! / खामोशी से लिये प्यार तुम / थोड़ा मुझसे बतियाना / अपने नेह की छुअन से / मेरे कदमों में उत्साह भर जाना / इतना कुछ लेकर लौटूँ.... / जी चाहे बार-बार आना... / मेरे संसार में ओ मेरे प्रियतम..! / तुम प्रेम के दीप जलाना/ हो पल पल मेरे पास / बस तुम झिलमिलाना...!'
– ममता थापा

पर्वतीय उपत्यका की इस रानी के मन में प्रेम के इस अगाध स्वरुप को देखकर मैं अभिभूत हो गयी. बुरांश के फूलों की तरह खिलना और खुशियाँ देकर अमृत रस बन जाना इन पहाड़ी बालाओं की सिफ़त है। ऐसी अनिर्वचनीय शक्ति शायद सिर्फ़ बुरांश के फूल में ही है या फिर पहाड़ी बालाओं की अगाध अप्रतिहत जिजीविषा में।

मैं अपने घर वापस आ गयी हूँ। मन मानों वहीं पड़ा है कौसानी की उन हरी-भरी वादियों में जो मुझे हर पल बुलाती हैं।

लघु-कथा

प्रोग्रेस

जितेन्द्र पस्तारिया

'अरे ! बेटा..तैयार हो रहे हो। अगर बाहर तक जा रहे हो तो अपने पिता की दवाई भी लेते आना। कल ही ख़त्म हो गयी थी'

'अरे, यार मम्मी ! मैं जब भी बाहर निकलता हूँ, आप टोक देती हो। आपको पता है हमारी पूरी एन.जी.ओ. की टीम पिछले हफ्ते से गरीब और असहाय लोगों की सहायता के लिए गाँव-गाँव घूम रही है. शायद ! आप यह नहीं जानती कि अभी पूरी टीम में मेरी सबसे बढ़िया प्रोग्रेस है'

पुस्तक सूची

अंजुमन प्रकाशन

942 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3
Mob. - 9453004398, 9235407119
website - www.anjumanpublication.com | email - anjumanprakashan@gmail.com

पेपरबैक

पुस्तक	रचनाकार	पृष्ठ	मूल्य
कहानी/लघुकथा			
क़र्ज़ और अन्य कहानियाँ	सुधीर मौर्या	80	80
अनुरागी मन	अनुराग शर्मा	160	140
लेखक की आत्मा	अर्चना ठाकुर	112	120
चाँद और लहरें	अर्चना प्रकाश	112	120
आलसी गीदड़	नीरजा द्विवेदी	112	120
उपन्यास			
सुकून	विक्रांत शुक्ला	192	199
प्यार न कहो	राजीव रंजन	228	150
ज़ारबन	शुभम पैलवी	128	100
एक्सीडेन्ट ए लव स्टोरी	शकील समर	240	150
माई लास्ट अफेयर	सुधीर मौर्य	112	139
मेरा दोस्त कसाब	कल्याण गिरि	272	175
ग़ज़ल			
ग़ज़ल कहनी पड़ेगी झुग्गियों पर	सज्जन धर्मेन्द्र	112	120
है तो है	एहतराम इस्लाम	112	120
हाज़िर है एहतराम	एहतराम इस्लाम	112	120
सच का परचम	अभिनव अरुण	112	120
यादों के साथ साथ	डॉ. सूर्या बाली	112	120
पुखराज हबा में उड़ रए एँ (ब्रज)	नवीन चतुर्वेदी	144	100
तुम्हारे बाद का मौसम	ज़ुबैर अली 'ताबिश'	112	120
टहलते-टहलते	रविकांत 'अनमोल'	144	140
तार से बेतार तक	डॉ. कैलाश निगम	112	140
तेरे नाम का ले के आसरा	गिरिराज भंडारी	112	120
समुन्दर शोलों के (उर्दू)	एहतराम इस्लाम	128	150
लफ़्ज़ पत्थर हो गये	राकेश दिलबर	128	120

पुस्तक	रचनाकार	पृष्ठ	मूल्य
छंद			
काव्य कलश	राजेश कुमारी	144	140
शब्द गठरिया बाँध	अरूण निगम	112	120
गीत/नवगीत			
हौसलों के पंख	कल्पना रामानी	112	120
कस्तूरी	डॉ. अजय कुमार	112	120
नींद कागज़ की तरह	यश मालवीय	112	120
चोंच में आकाश	पूर्णिमा वर्मन	112	120
नदी की धार सी संवेदनों	रोहित रूसिया	112	120
कभी मिटती नहीं संभावना	गुलाब सिंह	112	120
खुशबू सीली गलियों की	सीमा अग्रवाल	112	120
मधुबन मिले न मिले	डॉ. विष्णु सक्सेना	80	140
खुशबू लुटाता हूँ मैं	डॉ. विष्णु सक्सेना	80	140
कविता			
इकड़ियाँ जेबी से	सौरभ पाण्डेय	112	120
उधेड़बुन	राहुल देव	112	120
कोहरा सूरज धूप	बृजेश नीरज	112	120
ज़र्रे ज़र्रे में वो है	आशा पाण्डेय ओझा	112	120
हाँ तुम जरुर आओगी	पंकज त्रिवेदी	112	120
सौरभ	श्रीप्रकाश	112	150
स्रोत से बहते शब्द	अजय पाण्डेय	128	130
जीवन की परछाइयाँ	मनोज कुमार मन	112	120
छँट गया अँधेरा	शम्भू ठाकुर	112	120
मेरे अहसास	संजय किरार	112	120
श्रोत से बहते शब्द	अजय पाण्डेय	128	130
अकुलाहटें मेरे मन की	महिमा श्री	112	120
औरतें जहाँ भी हैं	अजामिल	112	120
मैं देव न हो सकूँगा	अरुण श्री	112	120

अन्य विषय

छन्द मंजरी	छंद शास्त्र - सौरभ पाण्डेय	160	200
महेन्द्र भटनागर : दृष्टि और सृष्टि	संपादक - देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'	128	130
ग़ज़ल के फलक पर-1	ग़ज़ल संकलन - राणा प्रताप सिंह	160	200
परों को खोलते हुए-1	कविता संकलन - सम्पादक सौरभ पाण्डेय	160	170
सारांश समय का	कविता सं- संपा.- बृजेश नीरज, अरुन अनंत	272	160
सूक्ष्म शक्ति एवं स्पर्श चिकित्सा	चिकित्सा पद्धति - सतीश राय	128	176

हार्डबाउन्ड

उन्मेष	काव्य संग्रह - मानोशी	112	200
बंजारन	काव्य संग्रह - कुंती मुखर्जी	112	200
मुक्तिपथ प्रेमपथ महाकाव्यगीत	काव्य संग्रह - प्रो. सरन घई	288	300
इतना मुझे अधिकार नहीं है	अभिवृत-गंगा	272	200
तार से बेतार तक	डॉ. कैलाश निगम	112	200
विहान	आत्मकथा - बृजबाला भल्ला	132	240
जीवन समर	कहानी संग्रह - बृजबाला भल्ला	96	200
नायाब शे'र	सम्पादक - साजिद ख़ान	256	300

साहित्य सुलभ संस्करण - 1
पेपरबैक, पृष्ठ - 112
8 पुस्तकें मात्र 160 रुपये में

इकड़ियाँ जेबी से	काव्य संग्रह
उधेड़बुन	छंद मुक्त संग्रह
कोहरा सूरज धूप	छंद मुक्त संग्रह
ग़ज़ल कहनी पड़ेगी झुग्गियों पर	ग़ज़ल संग्रह
ज़र्रे ज़र्रे में वो है	काव्य संग्रह
यादों के साथ साथ	ग़ज़ल संग्रह
सच का परचम	ग़ज़ल संग्रह
हाँ तुम जरुर आओगी	काव्य संग्रह

साहित्य सुलभ संस्करण - 2
पेपरबैक, पृष्ठ - 112
8 पुस्तकें मात्र 160 रुपये में

अकुलाहटें मेरे मन की - महिमा श्री (दिल्ली)
औरतें जहाँ भी हैं - अजामिल (इलाहाबाद)
कभी मिटती नहीं संभावना - गुलाब सिंह (इलाहाबाद)
खुशबू सीली गलियों की - सीमा अग्रवाल (कानपुर)
तेरे नाम का लिये आसरा - गिरिराज भण्डारी (दुर्ग)
मैं देव न हो सकूँगा - अरुण श्री (मुगलसराय)
लेखक की आत्मा - अर्चना ठाकुर (इलाहाबाद)
शब्द गठरिया बाँध - अरुण निगम (दुर्ग)

अंजुमन प्रकाशन की पुस्तकें सभी ऑनलाइन बुक स्टोर पर उपलब्ध हैं।

flipkart.com paytm ebay.in
SHOPCLUES.COM simply amazon.in redgrab.com

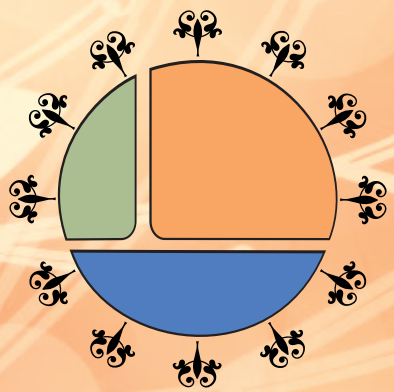

अंजुमन प्रकाशन
की पुस्तकें
सभी ऑनलाइन
बुक स्टोर पर
उपलब्ध हैं।

flipkart.com

paytm

amazon.in

redgrab.com

ebay.in

simply

SHOPCLUES.COM

India Book Store

snapdeal.com

website - www.anjumanpublication.com
email - anjumanprakashan@gmail.com